Chapter 2

==

:: द्वितीय अध्याय ::

:: विधिव-वेत्तू सवं वातिन-पुकिंट की पुकिंट से विवादानीजी के उपन्यासों को माध्यम::

==
द्वितीय अध्याय

विभिन्न-नुस्खा वरिष्ठ-सूचित की हुटिया से शिवानी के
उपन्यासों की भाषा

2.00 प्रारंभिक:

प्रथम अध्याय में उपन्यास तथा भाषा के पारस्परिक
संबंधों को लेकर कुछ तर्क-सामान्य तैयारी बातों पर प्रकाश डाला गया है।
अब यहाँ प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न-नुस्खा वरिष्ठ-सूचित से सम्बंध के कवितायें
आयामों को लेकर शिवानी के उपन्यासों की भाषा पर विचार करने का
उपयोग है। विभिन्न-नुस्खा कई प्रकार का हो सकता है -- सामाजिक, सम-
तामाच्य, निकट अतीत से सम्बंध, अतीत से सम्बंध -- रेतिलासिक, पौरा-
पिक, मनोवैज्ञानिक, स्थायित्वक और कहाँ न होगा कि विभिन्न-नुस्खा
के अनुसूच्य भाषा का प्रयोग उपन्यास के यथार्थतात्त्विक की मान्यता है। यदापि
शिवानी के उपन्यासों में रेतिलासिक-पौरापिक उपन्यास नहीं मिलते हैं,
तथापि निकट अतीत के सन्दर्भ तथा कभी-कभी रेतिलासिक अथवा पौरापिक
tनर्म्भ के प्रसंसात्मक उपलब्ध होते हैं। इन्हें शिवानी की भाषा का
व्यतीत संबंध होता है, उसका प्रकटिकरण करने का यह यत्र यहाँ हुआ है।
विश्व-वर्तु की द्वारा का निर्माण करता है और इस विचित्र-वर्तु भाषा की जो महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उसका निर्माण पूर्वकार गुरुओं में चित्र नहीं लगा है। पात्र के निर्माण में उसका बाहरी आया "वास्तव-प्रतिज्ज्ञा", भीतरी आया "आत्मात्मिक प्रविष्ट्य", उसका परिवेश, शिक्षा-संरक्षण, लिंग आदि कई आयामों को ध्यान में रखना दर्शन है। अत: उनकी बात देने समय भाषा के भ्रमों की काम में आता है। यहां यह विचारधारा करना का प्रयत्न हुआ ढेर है कि चारित्र-शिक्षा में फोकस भाषा-प्रयोग में शिक्षालीका क्षतियाँ तक सफल हुई हैं।

2.01: "विश्व-वर्तु एवं भाषा का संदर्भ:

विश्व-वर्तु एवं भाषा का बहुत निकट का संदर्भ है। उसी "विश्व-वर्तु होंगे", भाषा भी उसके अनुसार होगी। विश्व-वर्तु यदि कोई नुतनत्व से सम्बन्ध है, तो भाषा में उसे लेखनित शब्दावली अपने-आप की आपकी। उसी प्रकार विश्व-वर्तु यदि अप्रत्यय या डायरेक्टें से बुझ हुआ हो, तो भाषा में भी उसे सम्बन्ध शब्दों का आगमन होगा। खिदानों के उपन्यास "हज़रकी" का प्रारंभिक आंशिक सामाजिक निर्माणकारी के वर्तु से संबंध है। उसी पन्ना एक ऊंची पाठक की नुतनत्व से, अतः भाषा भी वर्तु के उस वातावरण को तेज़ आया है। इससे उसके खूबियों को तर्कदार एक लोम्बे बूख में खड़े रहना पड़ता। एक लाल केस्ट में बंधी डायरी में, उसके लेन-देन सुलग बायट तक स्पाइससेंट की तिथि देख करते जाते। केवल एक ही ग्राहक के लिये इस डायरी में लिखी तिथि का कोई महत्त्व नहीं था। इलिम्बा के प्रमुखतादार सिस्टमतिक, जब वाहें तब पनना की पूर्व-निर्धारित तिथियों में उल्ट-फेल करा सकते थे। पनना का उनसे प्रथम परियोजना राज्यबन्ध के एक जलते में हुआ था। पनना का हुमुहर कष्ट, अपूर्व लोगों और विकसित कठिनाओं की चर्चा उन दिनों समस्या वंशावली में खेल बुड़ी थी। सम्भाव्यता, इलीन्क्राइस-गूडी में भी, आइनो-रूक में उसे निषेध सम्मान तत्काल असंभव ढ़ेर किया जाता। ...
अनाचेत नाथ, और अगतिते नसी / और अब्बुलूर बुल और पतितेवर पति । ... 
मधीसंस्का में भावानमोर छोकर पन्ना ने गाया, तो तुम्हाराओं की 
आंखों में आत्म छलक आये थे। क्या गुरूदेव ने यह परिक्षा उसीके लिए लिखी 
थी यह उस पतिता के क़ब्ज़ा का जादू था या परिक्षाओं का ? ।

उसी प्रकार शिवानीली के एक अन्य उपन्यास "मैरी" में एक 
अमारी साथ की संस-साधना और उसके आख़िर के बस्तू को लिखा गया है। 
शिवानीकर स्वामीनाथन दैसे तो एक पत्रा-लिखा गुरू था, पर्दू की सादगाना 
में पढ़कर एक तारीख बन जाता है। यहाँ उस उपन्यास ते एक उदाहरण 
प्रस्तुत है -- "सांभाल, ज्ञातिनी शरण, भदर, इंग्ला-पिंग्ला, 
तुम्हाका, सत्त-साधिनी, प्रत्याहार प्रत्याहार, सब बा तो उसके 
सब्जिया लिख सूरे बाबा-आलगने पढ़ने लगे थे। ... गुरू को यही इम्मा 
थी मैरी, जो कभी उनकी साथना-मार्ग की पुृसल्ला थी, वही क्या 
गई बेंद्रों की केल -- उदाहरक हर केम दिया -- रिक हो रिखा। जब 
गुरू, जब गुरू। ... गुरू ने ही मुझे इसी धारी के पास प्रवेश जन्नरोध 
की बाजानी सुनाई थी मैरी। माया दी ने कहा था, उसे पुस्तका -- 
"मेरे कोलानारं, अल्लात: तुम्हें नई मैरी को ही क्या राक्शि कराय ।
......"उसके हृद का पांडिक गुरू मैरीवान लत बनने देना मैरी -- हृद भाग 
जाना, हर करी जाना, बहुत हर। " । यहा पर जो शवताली प्रसृत 
हुई है उसके संबंध तन-मार्ग, सहयोग-सहयोग आदि सम्प्रदायों से है।

शिवानीली के उपन्यास "ग्राम खेत" का किन्न अपनी सकाँची 
पत्नी नंदी की आत्मा कर मल्लिका नामक एक अन्ना-ब्रह्मा कर्मन सुनाती ते 
प्रेम करता है। मल्लिका नंदी ते अधिक तुरंत नहीं है, वार्षिक लोन्दर के 
भारतीय मानदनांत दे देखा जाय तो नंदी लोन्दर में मल्लिका से इकोस 
ही पढ़ती है, पर्दू और तार ताम-सादग और लोन्दर के लिए ने 
मल्लिका माजी मार ले जाती है। उपन्यास के इस कथावस्था के परिक्षेत्र 
में उसकी भाग्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है -- " पुस्तक की श्लोक 
का श्लोक व्यक्ति नारी का तार्किक ही बादता है । कभी तुरंत पत्नी पति को वह में
नहीं बल्कि और जब तक काली-खूटी पुढ़ित-सी बदलकर नहीं भी तुंगर पुढ़ी की अपने नायके चर्मों का दास बनाना छोड़ देती है। इसी के बदल की मलिका के बेटे में, रघुवाना दो बड़ी-बड़ी धनुस-सी निंदी आंखें के और हुई थी नहीं था। हिन्दु उन्होंने दो हत्यारे आंखों के उरसके माजक यौन की बागरीय समझ ही थी। उस चंचल-सुंदर रमणी के कटारों में, अंजीर में, आर्यपति में कई भी नर्तका का खेला नहीं था। बार-बार झलकता ते वह दोनों आंखें अपने उन्मात उंरोजों के उमार ते जानवरबार गिरा-गिरा देती हैं। और तुरिकता वातकी की हूँड़ियों ते जानले की ही अपनी सुग्री यात्राओं में बांधकर, गर्व से ननदी की जोर देनेकर, छूक जुनीती दे डालती, ननदी के पँच ने कभी उसे ऐसी आंखें से नहीं देखा था।

वह मलिका की जोर देने तो आंखों में लाढ़ कल उठता।

"समझानमयमा" उपन्यास में श्रीधर नामक एक पुराण बघत और रसिक-प्रकृति के व्यक्तित्व का दिखावा हुआ है। उस चमनि के रहस्यों में रचिता रहने का प्रश्न था। उपन्यास की नायिका यमी की लक्ष्मी हुआ के सातर गौरव भरी ऐसे ही शीर्षीनों में आते थे। लेखक ने इस प्रश्न का जो विवरण दिया है, उसमें वह गुण और उसकी परशुरा वोल्की-ती प्रतीत होती है। प्रया — " लक्ष्मी के शवसर रसिक प्रकृति के जीव थे, हिन्दु उन दिनों तो कुमारों में रैल्लाह करिया की मिस्रेन्स रहना भिक्षकी भी समुद्र व्यक्तित्व की सृजन का गतिरोध था। उसके कर्म-कांडो शवसर की मिस्रेन्स थी। कुमारों की भूर्व नृत्यांगना, राधाराणी।

रामायण की अपहरण रथी के उपरित मैथुम के हो जहाँ अनुदिति मय-मय-नातकी अपनी भाग के साथ असम्भव की उस बुकाहत तंग गली में रहने यही आई थी। लक्ष्मी के शवसर ने ही अपनी उस नवीन प्रेयसी का नाम धरा था रामकोटी। कभी भी उनके गुड़ में कोई तीज-स्योटार, विधाद-मुंडन होगा, तो डोली में भिक्षु कुमार की ही गरिमा से मिलिता रामकोटी अवशय पहारती। चैत्रजी भी वह बड़ी नथ का बुझ-निमित्त बुद्धि संभालती वह अवनि से उतारती, तो चन्द्राणन पर चंद्राणी के एकाणिया फिड़ों का शूट तना रहता। विपरीत ही तीर्थ बाती
की विनिमय से टाय बाधे झूठी हो जाती है। एक दिन बकरी के स्धुर स्नाधर भारीरेन्द्र की मालिका की तस्वीर से उसकी गेलगी हुरती का नुमा लेकर अन्योऽप्रा के प्रख्यात देश-मार्ग वुलाईं ' के पास पहुँचे।

पैतृ भी हो , ठीक उसी नुमे की एक हुरती उनको प्रारंभिया मालिका के लिए भी सिनियो होगी। बांधों में ज़ालरों की मोहक हुनारों के बीच पतली-पतली फ्लोरें , बीच-बीच में गुँजे गिट की महीन पुष्पन और कमर में अज्ञातक कतारिस्टिक का रेता वंदन , जो कब्र-कब्रों की मंदिय गदन को और भी निकारार कर दे रहे हैं।" 4

2.02 : समातामिक विकास-वर्श और भाषा :

शिक्षार्थी के उपन्यासों में ग्रामः समातामिक विकास-वर्श ही उपलब्ध होता है, परंतु कई बार इस पात्रों के संस्थानों के भूमित्रियों में के माध्यम से वह निकट की इस पात्रा तय कर लेती है। विश्व समातामिक विकास-वर्श के निश्चय भाषा भी उसी समाजाली विशेषताओं के लेकर आनी आजिए। "समाजनम्य" उपन्यास की नापिया वम्मा एक डाक्टर है। वह बम-तेलनुप्ता नामक एक उपयोगित के अनुसार में डाक्टर है। उसके साथ उसकी सहायक भी मिली है। एक बार जब वम्पा नहीं थी तब बम. तेलनुप्ता की पुरी मुद्रों तेलनुप्ता वम्मा की भाषी इस बात बताया को बेहद अपने बंजले पर ले जाते हैं। बुढ़ी को गर्म था और वह होते गिराना बांधी होती थी। मुद्रों ने इस अपनी स्वास्थ्य दिखायी थी।

फलतः उसकी दालत बहुत बचाव थी, जिससे तेलनुप्ता बनी को उसके बंजले पर बचाव होती है। समातामिक भाषा का एक बहुत उदाहरण है। "तुम्हारे जाने के बाद को दिन बढ़े तो दो होते हैं जीत भी। तुम्हारी बनना तो होती है। तुम्हारी बनना का केंद्र न होता जोशी , तो में कम हों नाहीं जाती। पहुँची तो देश झड़की दर्ज से तड़प रही है। तब ही मुद्रों तेलनुप्ता इंस्ट्रूक्शन देते लगी के - नेता-कन्त इलाक्त और
इन्दुपालक पेंट। जी में आया, एक अच्छा मारकर, छोकरी का औंट उतरने
ते दक्षिण दिशा में मोड़ गई। करम कर्णी रानी और फिर हमें डाक्टरी सिखाकर
सिंधी। तारी रात मौत से जुगाकर ही बचा पाई थी लड़कों को। तरार में
पुल बोल गई थी दोनों। कहती थी सोलहवां सप्ताह है, पर कम से कम
बीसवां सप्ताह था। वायु दी दिन उसे दिलील पढ़कर, मिस्टर सेन-
गुप्ता मुरादी को आधा समय, स्टेजस से लौट रहे थे कि उनकी निमोतीन
की धरीवाला उठाकर, पठानकोट एक्सप्रेस धावड़ती निकल गई। दोहे
मिर. सेनगुप्ता का ही था, गुप्ता के वौकादार को डा-ध्वाकर ही
फायद बुलवा नियाम था। ये आप-बेटों का ऐसा अंत देखकर भिलेंज
सेनगुप्ता एकदम ही मुंगी बन गई है। सुपरापैण से हरी है।
भैरव-नाइजर दे-देकर कई दिनों तक मैंने उन्हें केहौं रखा। ये आप-बेटी
अब सब से देखा नहीं जाता। तुम सोप नहीं लगती, आई देव गोत्र हूँ
हें। इस दिनों में उन भावधारी अंतर्वों को देखो-देखो ईद आई
नीड ए शोट। • 5

"कुपकरिणी" की कल की एक विदेशी कंपनी में नौकरी करती है।
उसके प्रेम थे मिर. शेखर। शेखर कंपनी के जिस उच्च सिद्धास्त पर
आधार थे, उस गद्दी पर अन्य कोई भारतीय अफ्तर कभी नहीं बना
था। शेखर पुराने आई-सी-सा थे, परारत विवाकिता पलनी के जीवन
कान में तो फिर जन्म संदर्भ से विवाह कर लेने के बारे में उन्हें उच्च
तरकारी नौकरी होना पड़ी थी। अन. शेखर विवेक को गये। वहां
उनकी मैंट इस कंपनी के मालिक निकोलसन तालाब ने हुई। निकोलसन
तालाब ने उसके पेदमे पर फ्लामिंगो सुबी-दीपर अंतर्वों में मिलकर व्यवहार
पदार्थ को देखिया था। उपन्यास में शेखर के आर्या, उसके
काम करनेवाली महिलाएं तथा कल के प्रवाह शेखर का आदर्श हिन्दुवाद
का जो वर्नन मिलता है। उससे वर्ष के अनुभव समाजवादिय भाषा
के दमन होते हैं। • उसके दक्षिण में एक मात्र कल की रिस्टरांसमेट नहीं
थी। आंग्रेजों ने उसके रंग और कला आर्टेमिया कार्डेंट-विडिया शुरू
पड़त-किता "भिक्ष जोशी", उर्मिला-सी नृत्यबंधी रंग-रंग का बाल कुलि
फिस पटनायक, जो रिसेप्शनिस्ट बनने से पूर्व देश-विदेश में जाकर अपने 
अपने आप के प्रमुख हटोली की सुभाष दिराजकर मुद्रोत में बना कर 
लौटी थी और तीसरी फिस ड्रा, जो आजाद की उड़ान से काल्पन 
कोर्ट स्वेच्छा से अमावासीय नेपर-ड्रेसेस का पद लिया, ढाला पर 
उतर आये थे। पर फिर भी किया काम पड़े न पर कही की ही पुकार 
मचली। अन्य तीनों तुर-मंदिरों में इस बात को नेकर आत्मा दिन नारो- 
तुलन ईद-उर्दु में अपनाई थी चिटकर रहती, पर फिर भी भी। 
केबरो को नेकर कही का नाम भूले आम लोटने का दुर्लक्ष किरी का 
भी नहीं होता था। होता भी तैसे 9 जात तक कही खिलने दोनों को 
एकान्त में छूटते भी तो नहीं देखा था। — ि 6

"तर्क" उपन्यास की पुष्पा पर्त एक उत्तर में ग्राम अध्यायिका है। राज्य के 
राज्यपाल के स्वागत में उन्होंने एक बड़ा सारा कार्यक्रम रखा 
था, उसने गवर्नर सबोद्य अध्यात्म उत्तर कर दिया था। आज जब प्रेस के संस्था 
का कार्यक्रम बनता है तो उस दिन का फिलापी ग्राम पर्व पर वन लिखा 
है —

"सूर्य कुमारी पंत।

सूर्य कुमारी के नाकिक्षेपण मन्त्री श्री भोस्लादता गमरे घिरे में 
पढ़ाते हैं। यथावतः "पूर्व वह आपके ग्राम में रह यक्षे हैं, हातों से पर 
फिर चढ़ा आना वाले हैं। घिरी बार लामान्य-ती सुखम्य में ही 
आपकी छात्राओं ने जो भुंडर कार्यक्रम प्रस्तुत किया था, उसे देखकर राज्य- 
पाल की नहीं। उनके तात्कालिक से आपे पारसी संवाहित भी 
मुख हो गए थे। मुख विवाद है कि इस बार भी आप हेम निराम 
नहीं करेंगी। का पन्नुद अपना भी है। स्वाधीनता-दिवस की यह 
स्मृति आपके ही महबुब महसूमी के सुखित और आपकी छात्राओं के 
कल्पनात्मक में श्रद्धालू हो। इसी विनिमय कामना है। — ि 7

इस पर भी हेम तमामथम्यि भाषा की बालक फिल्म है। हालाँकि 
"ग्राम" और "सूर्यक्षेपण" जैसे शब्द यक्षे अबते हैं। इसके स्वागत पर "ग्राम" 
और "लोकप्रिय" शब्दों का प्रयोग वरिष्ठ था।
क्रिमिनली के लघु-उपन्यास "विषविज्ञाया" की कार्मिक कौशल एक अत्यंत झंडे युक्त है। वह भारत-होटेल है। उसका विमान-वालक डिस्क्ला एक कामिक व्यक्ति है। एक बार उन्होंने विमान "फैस" को जाता है। परिचारक नाथनी और डिस्क्ला बन जाते हैं। वाराणसी के निर्माण की पहली धरी थी। कार्मिक के सन्दर्भ में वह बात प्रस्तावित थी कि उसकी जबान काल है। अतः पहले वह उसकी भी प्रस्ताव करती है। वह जान से छाया था। एक बार उसे अपने बहनों को रोकता है प्रस्ताव की भी। और तर्कालंबों के कारण से उनकी झलक हो गई थी। जब तभी पक्षीयों के बारे में कहानी जाती है। परंतु उस दिन स्थापना तथा डिस्क्ला के आकर्षण व्यवहार के कारण उसके संगम का बाध्य भी टूट जाता है और वह उसकी और वीं चर्चा की जाती है। 

अन्ततः क्रिमिनल का दिशा पानी पोशन के कारण डिस्क्ला भी झलक हो जाती है। इस प्रसंग के सन्दर्भ में जो भावा प्रस्ताव हुई है,

उसके साथसाथ संसार संरक्षण का भी जोड़ होता है — "न यस हृदयना होती न मुख्य अपनी यह देशोना सम्भवती। उसके भारी कठ के अनुपम आकर्षण, का मैं भी लोक माना पुरानी थी। इस तौर पर यह आकर्षण के केन्द्र का एक अर्थंत लोकप्रिय समाधार प्रस्तावित हो रहा था। उसके कठ के इसी बाढ़ पर भैंडर अनव राजमार्गों कर गिनी थी। यह तो मैं आपसे कहना बी नहीं था कि डिस्क्ला इसमें चलाते चलाते। मैं कोई विशेष दिक्षित था। पून के स्वर्ण दर्शन की इतिहास के पैरों का जीवन विश्वास था। उस पर झंडे के कठ में भी अपने बेदख और मृत्यु आखिर भी उसे बिचारता में गिनी थी। भीतर मैं तीसरी दुर्गार थी, उस दिन उसके उत्तरावृत्त दिशासंद की प्रमाण व्यक्ता तथा प्रस्ताव के शास्त्र रहा था। 

श्रद्धांजली में वह माइनियव यादनों की प्रस्ताव-पूर्ति तथा की निर्देश लग रहा था। 

पैर अपने बक्से दूरदेश में संग्रह, देवदत्त पालक विश्व की तितिश्च धम्म से पुनःपुनः एक-एक बुद्ध वींची और उसे इत मिला। मैं आशा। उसके झंडे के बालों पर आपका माफता धर धरकर चार जाती के ही छल ते
कोफिल के चंद्र का तवर बदल लिया, है हुम हंदर लग रहे ही, जोन 9' 
कैने उसे पल़ती बार उसके फ़िल्‌वियल नाम से पुकारा था, इलीसे उसका 
पूरा थेरा चमक उठा।' 8

पहां पर "मैटेरिया", "वेद-विश्वेश", " जीवय-विज्ञान"
आदि शब्द समाकालिक वस्तु की प्रस्तुति में सदायक होते हैं। शिवानीजी
वे बार तो आर्वी शब्दों का प्रयोग करती हैं, और वे बार आर्वी शब्दों
का हिंदी स्पायन्तर इस प्रकार करती हैं कि उस से माहा की अर्थता तथा
शक्ति में बार याँद लग जाते हैं।

2.03 : ऐतिहासिक वर्त सांस्कृतिक विकास-वस्तु और माहा :

पहले निर्देशक किया जा पुकार कि शिवानीजी ने सामाजिक
उपन्यास की लिखी है, ऐतिहासिक या पौराणिक नहीं; परंतु उनके लेख
में ऐतिहासिक, संस्कृति और धर्मांश के बीच-बीच संज्ञा आते हैं। बां-बांहां
उनका इतिहास-वस्तु ऐसे पुस्तकों में निर्मित हुआ है, बां-बांहां उनकी
भाषा में ऐतिहासिक, पौराणिक वर्त सांस्कृतिक शब्दांशी का तमामों
सत्तवता की है। है। तथा वह उदाहरण-रचना कुछ पुस्तकों की
भाषा की प्रस्तुत किया गया है।

"कुमारवाम" उपन्यास की नारिका चम्पा एक डॉक्टर है।
रामदत्ती का पुत्र मुखर भी डॉक्टर है और वह भी चम्पा को बेताब
प्यार करता है। चम्पा के कारण की वह जागत के अधूरे घरों से आगे
रितों को फूकर उठता है, अतः एक दिन रामदत्ती आगद्वार होती
हुए चम्पा के निवास पर जाकर पूरा पड़ता है। रामदत्ती संस्कृत के
महामंडल हैं, अतः उनकी भाषा में संस्कृत के संबंध में सहजता आ जाते
हैं। 

रामदत्ती ने विद्वान की दुकान से कलेक्टर की भाषा
भाषा बैठक के देखरेड़ फिर अपनी क्षेत्र वाणी का गंदाता चम्पा की
निरोह नर्तन पर ताथ लिया। विवुखक सैनिक उस विकाल मिाद के लात सूक्षमों को पार करता हुआ ऐसे मेरी ही तरह तुम्हारी इस महत्त्व-सी हरे के ताथ आठ सूक्षमों में पहुँचता है, विनित वार्ता-नृत्यों से सुनिश्चित मातीलेखन के आई की देखकर यून्ने यो रच्या था, वही कहने को आज मेरी विहार फक्र रहे है छोटे-छोटे।

“माया बदकाहर उल्लासः रिलायमु तुल्यायधिः।”

तथापि रमणासदीयाः आत्मसुखः नभिमाऋयायोऽलोऽयाः।

“ओष्ठ, जैसी तेक बातिल परिस्थितिः” है, यदि मैं इस उद्देश्येन उल्लास, रिलायमु तुल्यायधिः के लिए रमणासदीयाः आत्मसुखः नभिमाऋयायोऽलोऽयाः। कोई भी तैरे पात नहीं आता वाटेना। वप्प नहीं, रमणासदीयाः आत्मसुखः नभिमाऋयायोऽलोऽयाः।”

“कल्पित” उपन्यास में पन्ना की माँ मूलीर की जो ब्यंग आयी है, उसका ताथ निकट अति बात है, जब हमारे वेश में अंगंजों का बलन था और छोटे-छोटे लखाईकाय का था। क्यावस्तु सांतकालिन है, अंगंजों सयता के सम्भव है। अतः उसके वर्ण में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, उसमें भी उस वर्ण की निधि निषिद्ध है। पन्ना की मां का नाम था मूलीर। देखने में अवार्थान व्यक्ति न लगते पर भी उस रूढ़दार पुंजीय का संबंधा का, तवाँद्व पवित्रादिक समाज में उन्ना-कैला लगा रहता। उसके माता कल्प की दुःखित हृदंदों अंगेरनी खुशक बसे-बसे भारतीय अस्तर दंग रह दाने। जिसके द्वार में देश की तत्ता थी, उस ल्योंकी जाति की चीतने से पड़े उनकी भाषा तीनी दोगी, यह मूलीर भीतरीआस्त मात्रहती थी। दो-दो गर्वनु एक साथ रचकर उसने उनकी भाषा की तर्कस्तिय स्वर्ण की अपनी विवाह पर बीतकर रह की। पवित्रादिक समाज का कोई भी बलता क्यों न हो, माध्य पाठ्य का लाट स्वर्ण की पिंगड़ान्तिक पाठ्य का कोमा, पोली-प्रकरण या लाट के पैम का ब्याज, गलने के भाषकाल, पान के बाँध ते अधी क्यों का बूढ़ और वेषा उठाये, मूलीर के ज्ञाता की बुरी ते सती कैसी रहकी। उद्दी धिन्दी और अमेरीका, तीनों भाषाओं पर
उत्तर समान स्थान ते अधिकार था । एक बार उसके दिनेदी की डिकी ने उसे दस्ती-दस्ती में "क्षेम तम्मे मुक्त हो कर जाना तो वह भक्त उठी थी — "इति डिकी नोट र कॉम्यान्डेंट डिकी " । उसने कहा था । "क्या तुम नहीं जानते बेगम सम्म देखने में कैसी थी ? उसी तम्म ताधारास । और क्या तुम वाहत हो कि बेगम सम्म की ही भाँति में भी अपने विदेशी प्रेमियों को ध्रोकर मारती पिलाएं । डिकी दंग रह गया था । इति हास । भूगोल । आधुनिक । ज्योंतिर तबसूचा पढ़ने के लिए समय देखा । ते भिड जाता था उसे । ठारै के कहा बड़ा गैम फिर तत्काल है । फिर झील की सुर्खिया और उसिदं प्रशिक्ष हैं । तबसूचा बानती थी वह । यदी नहीं । उसकी बनाया कोकेटेल एक-एक अधार-सारी पूरे के लिए कितने ही समय विदेशी मा० भाद्रादी धुनने जमीन पर दे०कर रह जाते । छोटे-से बड़ी की सुर्खिये दाख-दाख वाली वह । मुहिया-ती गूढ़ा । निकट अने पर भी पन्ना चक्क की हकीकी सी दीखती । लाट तहसूल के नैनी-नाराय उसके अनिति धोकर अपने । मैने नाथ आया था रावण-ती देश और मधुमकृत के-से वेठे वाला भवानक हकी भरत सी । ऐसा इरावण पहुँचा कि मेरे में कोई देख न । ती भय से पुर्नित होकर निर गिर पड़े । पर आता । क्या गई था । उसना । अपने भारी मारत बना ते उसने "वीय नो मोर मारी मैं की । खोट दीय नो मोर घुटे । " गाया तो मूर्ति सिलाया लेख रोने लगी । "-10

सिजानी के लघु-उपन्यास "मार्फिक " की निलिनी ने एक भक्त आवास-भक्त का निर्माण किया था । वह अजूल संपत्ति की स्वामीनी थी । उसके पास एक बेश्रीमती मार्फिक था । दोनों बाटलियाला एक कुष्ठात तस्फर है । उसका व्यवसय आर्थिक है । किसी पास न दानिवाली निलिनी भी उसके पक्ष में आ जाती है । दोनों बाटलियाला के लम्बू मध्य प्राधिक धीरे पर यह कहती है — " नैनी ही बड़ी बूथही जग जग कर इतना नष्टों बनाया था बदन । बड़ी-बड़ी सुपारी हैं । किसी बड़े शंकर में इसे बनाया होता तो शायद आप भैसे क्या-पारकी हके किती तरार लेते । नैनी भी बड़ी बड़ी मुर्ति है पेटेलुरु
तीकरी के केवल लोकम पिठली की तीप से बनी दरगाह की टकर की इमारत बनाने का तपास देखा था। देख तो रही है, ये तंग-तराशियाँ, बेल-बूटे-नवकाशी, तब अधूरी हो रह गईं। न मेरे पास लौदी, खियाजी, गुलाम सुगरङ्ग का-ता देखा है, न इस रोगी बूढ़े शरीर में शक्त थी। ... उस पर दीना बालकीवाला का एक कथन है। वे तैयार भारत के अद्भुत कारोबारों को बंदी बनाकर समर्थन ले गया था, मेरे जी में या रहा है, अलापन भी बलिन्दी बनाकर बसाई ले चुके। यू ऑर चोरियाल।" ।

इसी प्रकार "कालिन्दी" उपन्यास की डायम का साहित्य आलोकित ध्यानिकागार पुस्तक की पुष्पी थी। उसके सिंद्र-नगर के कारण उनका निवास परिसर-गुड़ में नहीं हो तो कहा। विपत्ता के साधारण से उन्होंने भी ध्यानिकागार विषय में कुछ महारत हासिल की थी। अपनी तथा अपनी पुत्री कालिन्दी को कुंडली के सन्दर्भ में निम्नलिखित परिचय देखिए:

कालिन्दी की वहूलाका घरमोहरों में लटकी जन्मकुंडली अन्ना के तामाने खुली धरी थी। -- श्री गंगेश्वर नाम: -- आदित्यार्ध गुहा करे नक्षत्रांश वराण्य: स्वर्गात्र कामानु हृदयन्तु मयावेश जन्मतिका , श्रीमु मकुमार राज्य सम्पन्नत श्री शालिवाहन शाल , उत्तरायणं , बिष्किर रहती, मातोत्तम माते पौषभाषा खुले पो दंक्यां बुधवारे , सिंद्र-लगनोद्यां श्री दक्षायिकामण्ड परिसरायनामाय गुहा, भायाम यमुकानांद दारिकी कमला, हुती, कालिन्दी नामिनी कन्यारतन्म जीवन अन्नों नगरे अर्थाता ... सिंद्र नगर में हुआ जो जातक करे सिंद्र की अस्वादी।

... तब अन्नों में हो प्रकट करके माने जाते थे : पंडित मोतिराम पाँडे और पंडित संदर्भ भट्ट। उनकी बनाई जन्मकुंडली का उन दिनों प्रथम पारिश्रमिक भी देना होता था, पर वैसे एक डॉक्टर कुलारे हमेशेहर डॉक्टर से कौन नहीं कहता। रैसी डी मोतिरामचंद्र ने अपने गुलामी सृजनता की पुत्री अन्नपूर्णा की कुंडली तब बिना कुछ लिखे ही बनाई थी।
जन्म-कुण्डली क्या थी पूरी नौंगी नागपुरी लाड़ी ! नाना केल्होटू के
लुसोखित , गोष्ट के मुर्गिया सुया के नीचे तुंदर भोजी-से अंडरों में मिली
निप में अन्न की ललट-गना , दिश दक्षता से मोरियरामा कर गये
थे उसे विवाहा भी पड़ता तो तारादंड देख रह जाता ! कैसे आउट हो गया
उसका तिवा प्रज्ञनम ! ... अन्नुकुण्डली , अपनी कुण्डली अपने पिता
के अस्थियताओं के साथ जन्मन में पुष्पांशित कर चुकी थी , जिसे वह पूर्वित
अभी भी उसे ज्यों की रूपां याद थी -- देवस गार्डस की पुनी थी , जैसे
pकिताब का मर्म तो ममली हो थी ! "मृते हीन ब्रम्हेश्व बोलते यस्मति
सौम्येषिक जीवनश्लोक।" उसके अधिकांश तपस्य स्थान स्थित नियंकृत मुझ
पर ही की कुमाउँ की दुखित नहीं थी ! ऐसे योगी मृत को ली विदि
परिश्रमा न होली तो आर्चन भी बाद थी के..."।

तात्पर्य यह वकि ऐसे प्रश्नों में विद्यानीजा की भाषा अपने दर्शन
के अनुप्रयोग होती है ! इसके उनका संस्कृत , इतिहास , व्यूहशास्त्र
पथारंत का खाना भी प्रकट होता है।

2.04 : नगरीय और ग्रामीण विष्णु-सत्य और भाषा :

यदापि विद्यानीजा के अपन्यासां में नगरीय-दस्तु की ही आधिकारिक
मिलता है , तथापि उनके प्रायः बहुत पात्र पहाड़ी होते हैं , अतः पहाड़ी
के कुमार के ग्रामीण शब्दकों का भी उनके वर्णों में समाहेन हो जाता है।
यदां यह ध्यानात्म कि स्तुति विद्यानीजा की मूलतः कुमार प्रेमकी हैं
परंतु उनका बादका अभिकार्य समय दिलित , क्षतित , स्वाभाविक जैसे
बहादुरी चौहर में व्यक्त हुआ है , अतः उनके विशेष में भी यही तब उत्तर आया
है।

विद्यानीजा के अपन्यास "जौदह पेने" का कर्नल विद्यानीजा पाठि
तूरतः के कुमार के पहाड़ी प्रेमकों का है , परंतु विद्यानीजा में उसका
बख्त व्यासाय का है। परंतु यही उसके रूपां रखा है। केवल अवधार
को उन्नी को व्यक्ति में पदार्थों जो रखा है। तव भी छोटीस्वरूपों में
आती है , तब अपने पिता की रक्षिता मलिका के साथ ही अधिकारों
समय व्यतीत करती है। यदाँ प्रस्तुत उपन्यास के एक उदार प्रकाशित निबंध को भाषा के संदर्भ में प्रस्तुत किया जा रहा है --

"और जब योद्धा वर्ष की आलोच्यां तीनियार करके घर लौटी तो मलिका दंग रह गई। मलिका मौती की गोदी में लेटकर मकान की अद्वितीय उल्लम्बोत्तशा की आबादी तीन दिनों में पेटरी के शरीर से। उसे फिर बाहर निकालने का प्रयत्न हुआ तो वह यून भयों की चलता ही रहकर पड़ी, "बाधिग त्वां बाहेर छाते-छाते की उम्मीद तीन दिनों मौती, आज बनाओ न चिंतन-बिचिंतन।" वह रखकर और वह ते कमर में केले बृष्टिकर मलिका उसकी मनाली योग बनाने में बुद्ध जाती। कभी कर्न मलिका और आलोच्यां को लेकर विचारित पर ही निकल जाते, खुद और तूफान के बाहर के साथ। मौती की गोदी में लेटकर आलोच्यां तीन दिनों रिकार्ड मुन्ताजी और कर्न नै-नै एसिट्री ख्रिस्टी की उपवक पढ़ता रहता। तीन-वार कर्न को मालिका उसके शरीर से ही एक अंग बन गयी थी, राखन सरकार एक मोटर शेडीएक्ट में बुरी तरह आत्मा डोर के दारियों और ज्ञान दोनों को ली जाती थी। त्रयु पति का इलेक्ट्रिक हेडर तैनीयोंर्डिचन नर्तक को तैनात कर, मलिका ने पति का शांमिल पद प्रचार कर लिया था। अब वह कर्न को प्राइवेट लेटेशन थी। पाण्डे मोटर्स, पाण्डे बुट फिल्म, पाण्डे स्टील ले तबके कारोबार की वस्तु, मलिका की ही मुद्रित में थी। कर्न स्वभावते ही रोमांच प्रस्तुतित की थी। उसके बीच में निर्भर नवीन नयी मलिकार्य आती रहती थी। मलिका भी उनके अविस्तर ते एकम की अनन्तिक नहीं थी। किन्तु यह जानती थी कि कर्न के हृदय के ताल में पेक्षा उसीको हुई गृहमति थी।"  

"कुमकरियों" को कर्न ब्रेक को संबंधित हो काम कर रही थी, वहाँ उसे वहाँ यहा विदेशी टूरिस्टों के ताप जाना पड़ता था। इन
टूरिस्टों में ऐसी बार दिखियाँ की मंदिरों की होती थी। गंध खड़े पड़ना, कई-कई दिनों तक न बनाना, गंधी होटलों तथा दराजों में बनाना बनाना हत्यादि उनकी आदर्श होती थी। ऐसे ही एक हिम्मेड़-कल के साथ एक बार की विस्मय स्थानों और शहरों के चक्कर लगाते हुए बनारस भुवनेत्र हुई। उस समय का दर्शन फ़्रूटकल्प है। कहने तक फैले पोले बालों की आयात कटाक्ष, उसके हुकूम के विदेशी अनुभूत जिन्दगी चढ़ उठने पर अल्मोट टड़क से दोनों पर जड़कर चढ़े ही जाते। बड़े-बड़े अल्मोटों के पत्तों में घूमे जा रहे गुलाबी मौजून की गुलाबी की लपरों ने दिन-संग श्राव-संग भटके मुस्कर हुए दल को रोक दिया।... ओह, डेढ़जिलों वड़, दल की जिंदगी की छोटी को-तो कुर्सी से हुक्कर वर्षित हार के संपन्न टँके को ज़ुकाम टाढ़े के त्याबी ठिंगने सरदार को अपने एक ही नीले कटाक्ष के पिठा कर दिया। " सबसे एक दम तोप्पा है, मेमला, नाना करी, तन्दूरी सुर"। सरदार को भाविक इतने पूर्व कालों में दिन-रात आते रहते दिकियों की जड़मारी निमाश का बाता अख्तार था। " टिप्पणी इटिप्पणी की संद टिप्पणी इटिप्पणी के के कहकर मुकारातो मंदिर जम गयी।... कहीं कहकर रह गयी थी। जंगला भिकौना बदूदरार सरदार था, दली की रक्षती "क़िले" टीन की कृपानिया। गंधी मोटी गंधे के खालवाली झोकरी और बांध खुलते भिकणों अनेकों तूफ़ान के बोकरे नौकर। पर दल के नकारात्मक में पिलने बनुते दिनों से उसकी तूफ़ान का रास्ता क्रमशः अत्यधिक होते हुए एक दम परिवर्न हो गया था।" 14

पिनानीज़ के लघु उपन्यास "गाधिक" की दीना बांटलीयाला एक कुख्यात ठांगिया है और बड़े-बड़े दलों के धनी-संपन्न लोगों से समपरी स्थापित करते उन्हें ध्वनि घेरना यह उसका व्यक्तित्व है। नवर्‍मनी भिक्षु के विशाल कला-संपन्न बंगले की धारा लेती हुई, वह उन तक पहुँचती है। वह नवर्मनी से बदली है -- " वात यह है जो, कि मे भी कभी आर्श-टेक्ट थी। " उसने एक तम्बी तांत बीचकर बढ़ा, " अब हम्बाई में
किसी तारिकाओं की आवासाध्वार से छुटकारा पाती हूँ तो ऐसे ही मंदिर-मखबरों की झुल फाउंटेन नये-नये आड़ डिया बटोरती फिरती हूँ। वह हृदी और उस उज्ज्वल सुंदर हृदी ने उसी त्रिकोणीय जिल्ला के भठ्ठी धूम्र को नवनीत-सा पिक्सा दिया।

बहुत दिनों बाद ऐसे। पिनोने उसके मखबरे की थोंग लगी सिंदूरी की डोल ताप्त बियां ने मंदिर होकर ते उसे उल्लिखत बन दिया था। ... "सब क्या है।"

दीना बाड़ीवाला ने गाय को फुस्की लेकर कदा। "मैंने गायान उम्र पिची सस्तरों और मार्ग की ऐसी अद्वैत भिक्षा नहीं देखी। यथा मैं पूजन की भूमिका कर बक्ति है कि आपका आराध्य कौन था। "बहुः नमस्तेः ते उसने हृदार।"

यहाँ क्यावल्लु भेंटक नगरार्थ-परिवेशन ते संग्रहित है। उल्लास की भाषा में वैद्यक श्रवण श्राधिक हृद्यत ते वही स्तर संग्रहित है। जो प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः गायान के भिक्षुत लोगों में पाया जाता है। भिक्षुतों के उपन्यासों की क्यावल्लु यों तो नव-जीवन से संपूर्ण है होती है। परंतु भेंटक उनके प्रायः पायः पायः गायान मूल के होते हैं। उल्लास क्यावल्लु की समावेश भी स्वयंप्रेम हो जाता है।

"बहुः" उपन्यास की वन्दी के पिता कुमार के प्रतिक ज्योतिः है। उनको अपनी पुत्री की कुम्बलो में देवधव-योग देख लिया था। गाया का असिर्म युगल सुरेश भद्र वन्दी की जी-जान से बाह्य है। परंतु वन्दी के भविष्य से अभिसा बदलता देवमन्द्र विकारी अपने अभिन्न भिन्न गदाधर भद्र के भारी सुरेश भद्र के भेंटे करवाते किया। अपने स्वार्थ के लिए फिर कुस्तो की अक्षयमान श्राद्ध श्रवण श्रवण के शान्तिकी की शान्ति जीत करते। अतः पुत्री को लेकर भद्र वन्दी की जाते हैं। और उसे आत्म-निर्भर करते हैं। उसे जीवन प्रिय विलास दाग्दार बनाते हैं। इतनी ज्ञान की प्रतिपूर्ण तुरे से एक अमानुष व्यक्ति है। वह पालिका की तेरह तान की बेनी पर भारी भार करता है और उसे माफी बना देता है। इस संदर्भ में तारे वन्दी को इस घटना की धूम देते हैं कहती है——
"और जानती है, वह अभागा तृप्तिया इत्यादि तैरते नाक कटाकर भागा है 9 जैसे कहूँ, घुंघरी लड़की के तामले आज एक दादरी के दिन, यह तब कहने में लाज आती है। इत्यादि ताउदवर जो पगली लड़की की तरबूज कर फरार हो गया है हरामी। अभागी तेरह की भी पृथ्वी नहीं हुई और जावरी गले से बंधी है। ताज़क में भी दर्द उठ तकते हैं। 'एक पल को गोटी स्तुति और पदार्थ मन-भर के धुले के नीचे दबो होने पर भी नदी की देह फिरफिर-सी ठंडी पड़ गई थी। ' योनिः है री 9 लगाता है रांग को दर्द उठ गया है। तत्पत्ता द्वारा इस कल्बोस्तनी का। अब तुषा भद्रत, तु ज़हा भी है करमज़े, तुकड़े हाय-हाय भर के कोड़े पड़ें। ' ताई न जाने का बहसहार जनकर उसके पीछे छूट गया था। ' 16।

"योदह फेंस उपन्यास का परिवेश तो मूलतः भक्त्वाना का है, परंतु उसका सिविलत फाड़ पदार्थों का है। उसकी पत्नी नंदी पदार्थों की एक अनवरत रेती है। कर्म ने झुल-रोति निम्नान में उसके विवाह लो कर लिया था। परंतु उसकी गोद में एक लड़की को डालकर वह जत्तरता जला गया था। नदी अपने भाई-भाभी के यहाँ अपमानित-सी जिम्मेदारी जी रही है। उसकी भाभी तारंगवी एक झड़शापु और धुरू-घुरू औरत है। वह राज-रिज जली-कटी बारें सुनाकर नंदी का जीना हराकर कर देती है। यहाँ उसकी भाभी का एक उदारत उत्सुकता है—

" ' ताई जैसी झोरस अपनी बोली की भी तुड़ने न है, जोरे जोरे उसे ढूँढ़ी है थाले पर । ' ' तुड़-तुड़ बक्कर करती। ' यहाँ जौन-सी आमदनी है, मालती कामनून सुमाक, हिमालय यही है सब हैं-हैं-हैं हैं पाई मिला, तो बनिये के ऐसे पुकारे— ऐसे दमियार के पल्ले बांध दिया। ऐसे मायेके में मही झोर-झोरे हुईं संभारी थी। ' ' ' कोई-न-कोई बात तो हुई ही होगी, जो अब तेरी मक्की-सा बांध दिया। ऐसी ही शर्म थी, तो भाई की छात्री पर भूंग दलने व्यक्त आ गयी। वाने को और तो टाई तेरे सताती हो, सतासता दूध तो तुम्हारी भिंतिया पीते हैं। उस पर नखरे देखी मूंग के। ' ' हाय धैया, मुझे लवणार्दित्तम ला दो।
यथा क्रमान्तर नर दो , छही कमजोरी हो गयी है। हमें हटकर खुटा रही है धीरी , जानें माई-माभी का खुंसा देखती हो। 17 साल पर जो भाषा प्रयुक्त हुई है , वह गुलामी ग्रामीण कथावस्तु के अनुसार है।

20.05 : वरिष्ठ-सुख्ति में भाषा का योग:

उपन्यास में लेखक उदासीन मानव-वरिष्ठ का चित्र दीवारी
ही होता है , परंतु इसके लिए उसके पास जो औजार है वह भाषा का है। यह जाता है कि उपन्यास यथार्थ की विवेक है। उसे दीर्घकाल अवसर द्वारा संगठित आलोचनात्मक पुस्तक "विवेक के रंग" में आधुनिक साहित्य की विवेकन की है। वहाँ भी उपन्यास-विवेक का "विवेक की पद्धति" तथा मार्की दिखा है। अभिव्यक्ति यह कि यथार्थ-धार्मिक उपन्यास का प्राप्त-नत्ति है। और इस यथार्थ के निर्माण में भाषा को जो योगदान है उसे कार्य नहीं करता।

उपन्यास में यह जो वरिष्ठ का निर्माण किया जाता है, वह दो प्रकार का होता है -- एक तो स्वर्ण लेखक के द्वारा और दूसरे अन्य पाठकों द्वारा या उनके पास के द्वारा। प्रथम पद्धति को "विवेकवात्मक" एवं दूसरी को "नाट्यवात्मक" कहते हैं। जब लेखक के द्वारा पाठ-निर्यास होता है वहाँ उसके बाहरी प्रकृति में तथा गुप्त-आंकुशों की विवेकना होती है। दूसरी पद्धति में पाठकों के क्षमे,क्षमित्वों में पाठ-सुख्ति होती है। परंतु इस सूक्ष्म वर्णनम में भाषा का उपादेयता तो अनिवार्य है। रहती हैं ही है। यहाँ विधानी--जो के उपन्यासों के कुछ उदाहरणों को नेते हुए उसने बात को कहने का यति हुआ है।

"याददास तेरे" उपन्यास की तुम्हारा तारी एक छही की दर्शन ओर सुदृढ़त और सुदृढ़। वह फिरका लिया नहीं करती। बारातों की करारी योगदान से भव्य-व्यक्ति को क्षति कर देता है। विमुखता पहुंच देनने की जानी-मानी हासिल है। ऐसी कंपनियों का माध्यम है। परंतु इस के अपनी युगुङुली ज्ञानों को प्रेरक गांव भईयाते हैं तब तुम्हारा अपने इस देवर
का पानी फिस्टा में उतार देती है। अक्ष्या भी देखकर देव रह जाती है कि निस पापा के सामने बोलने की फिस्टी की हिम्मत नहीं होती। 

लुझ्वा ताई किला-प्रकाश उन्हें पानी-पानी कर देती है। बिस प्रकाश का दर्द गात है, उसके आवेश में धारा भी उसी प्रकाश की प्रस्तुत हुई है।

यहाँ — * लुझ्वा का किला जबी जवाब-सा घिराई कुछ दरा को प्रयान: घेरे ही झड़ा था। गोल-गटल पेड़े पर बड़ी-बड़ी आंतों में संतार के पर्याप्त प्राप्ती के लिए जुनौती भरी थी। तीन-तीन एम.ए. पाट बहुमें जहां बहुमें जहां जहां नवायती थी, परि और तीनों पुत्रों की अस्थायी, उसकी जौंही सुदृढ़ में बन्द थी। वह पर की हाई-कमांड थी।* 18

अर जो डरन हुआ है, उसका परिचय पुराना मिल जाता है।

लुझ्वा ताई कुट्टे ही अपने प्रकाश का करारा तमामा मानी देवर्जी के गाल पर जड़ा देती है — * ब्यों लया, हमारी बंगाली देवरानी को नहीं लायें* 19 यह चालाम भिक्कु के पाड़ की रक्षिता धृतिका तरकार के लेख था। बिन्नियां-ती माथा में जब पड़ा कहते हैं कि *बोज्या, फिस्ते तुम तो वही ठीक़ ज्युनिया-भर की ऊंड-शुल्क बाहर।* तो उसके उस्तार में रोनी-ती सूरत बनाकर पूर पड़ती है — * सुनूंगी किसे लया, घर की लामी को तुम बड़ा जाए रुझ, तुझे ही होता तो बिंदारी आज इस कुटी के बन तर दुःख रह कुदुक के बिएवैद लोगों के बिएवैद पैदे थोड़े ही भागी!*

उसके प्रयाच वह जो अपनी तीन बहुमें का परिचय कराता है, उसके 

भी उसका परिचय उद्भवित होता है — * ये अपने रूप उसे बुड़े है, फ्यूजिलिवड़ों की लड़की है, एम.ए. पाट है, बुलुक तो बिहुला बूट रिल्म में लगा है। तल्ला आठ ती पाच है।* वह एक-एक कर दुनों के *कुंदन्तिकल्ल के देवी के, बहुमें का परिचय कराती जा रही थी।*

“यह लल्ला रखुवा को बुड़ है, इतने के एम.ए. किया है, अम्बर के मनोमुनकी की बेटी है, रखुवा तो डाक्टर है जुड़े पता है, आम्बर अपरिशिचत गया है, यह हुजठियों बौद्ध बुड़, ढुरिया तो हमारा आई.ए.ए. है। इसी से बुड़ भी “डबल” एम.ए. हूजठिया “। तदर आबकार के दीप्त ही उठा बुड़ को डबल एम.ए. में जो फिस्टी परिचय
करना पहले था उसका पुरा आभास सुम्बा ने "डबल " में पवारी "क" का प्रयोग एक ताल कर सप्ताह कर दिया । ये 20 पत्र पर हुम्बा का परिवर्तन-प्रस्थान करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, वह सबसे उसके उपयुक्त है। इसमें लेखिका ने एक "दिशिका" उत्तराखंडी या कभी पढ़ाई सात का विचार किया है। उनमें जिस प्रकार की प्रदर्शन-प्रयत्न होती है, उनकी जो एक वास मध्यप्रदेश "शेषाळंक " होती है, उन सबका व्याख्या करने के लिए, उसी प्रकार की नाटकमा भाषा का प्रयोग लेखिका ने किया है। उससे भी बीच-बीच में अपनी तस्वीर से जो लेखिकी निम्नाभिव्याख्या दी हैं। वह भी वरिष्ठ के व्यक्तियों को उभारने में सक्षम है।

"समस्तान वप्पा " उपन्यास में केवलसंत नामक एक पढ़ाई नौकर का परिवर्तन आया है। उस परिवर्तन को उसके मूल लय में उठाने के लिए लेखिका ने अर्क उस भाषा का प्रयोग किया है। यद्यपि तक कि उस प्रकार का तारीख-काल "सला" भी मात्र वात प्रयुक्त हुआ है।

यथा --

"तब सला हुई उभिला का गया। ये साली गैस-टोय की आंच ही बक्कात होती है, मैं ताब। अपने पढ़ाई का घुल्मा हुआ, तो जब घाटा चक्की लगाकर आंच तेज़ कर ली, जब घाटा, बाथर निकाल, मंदी कर ली। पर ये हमारी गैस तो पिंता के सारख धू-धू कर जली। तब ते कई देर का, ताह, एक छोटा घुल्मा लोप 9 पर स्वर बिंदु गया ताब। अब हम आ जारोगी मैं ताब, तो छोटा-सा घुल्मा लोप 9। फिर आपकी उस आंच की सिंही पढ़ाई बेन रोटी फिलाऊँगा। फुलकर स्वर टिच, अंदर ते हरिया से छोटी उड़न की पिटड़ी। मैरी भीजी कहती थी, "लला, शादी ते पछे हुम्बरी टाप के बेहुआ रोटी बायो कहती, तो या हुम्बरी इन निकम्ये दादू के आंचल लगाने। " बड़ी महज़ीया है हराफिन भीजी। वह बुक से हंसता, फिर भायो स्वामिनी का स्वाक्षर छहरा उसे लाभ गया। "क्या मैं ताब, तभीया ठीक नहीं लग रही है क्या 9 लेट
जाएँ आप। सुबह है तो पहली माफिक घूम रही हैं। याय बना लाए
एक क्षण । \ldots \text{ जब केतरसिंह बाजार में तबजी लेने गया तो में ताब}
के लिए बेले का पनी-गुंधा गजरा भी लेता आया था। उस संबंध में वह
मेमसाब ते कहता है — "एकड़ कली का गजरा है साला। गोले कपड़े
में लपेटकर रखना बोला है मेम साब। कल तक खिल जासा। साब तो
का आसा न।" २१

2.06: भाषा में प्रयुक्त विवाच और धारिता :  

पान या परिश के कार्य ही नहीं, प्रयुक्त उसके विवाच भी
उसके संस्कार, शिष्या, परिवेश आदि के अनुसार होते हैं और कला
भाषा का स्तर भी इन विवाचों के अनुसार होता है। जहां संगीत
विवाच होते हैं, वहां भाषा भी गामीर धारा लिए हुए रहती है,
और जहां हमें चंडकार्यक्रिया विवाच होते हैं, वहां भाषा का स्तर
भी लक्ष-दुकान ही रहता है। 

"कृपकिरी" उपन्यास की कवी मन-धर-मन प्रवर रो वाक्ती
है। प्रवर जी तक अनेक कवियाँ को धुरा गुला है। उसकी भाषा
काफी ऊंची है। कवी संदेश, को-स्वेच्छ-विशिष्टता, भुगता-तृणि और
रमाद न है। परंतु प्रवर कवी के आरोप के बुन दाने पुष्करण में रंगिला
है, अत्त यह उस्ते हीया-हीया ही रहता है। कवी प्रवर के मकान
में ही रहती है और प्रवर के अनुभव उसे बहुत पसंद भी करती है।
परंतु प्रवर की बहन गाया कवी से मेम-धर-मेम जाती-भारती रहती
है। अत्त एक बार माया में कवी की अपने कश में कोई सर्थराव पैने
शुभत है, तब कवी की कया प्रवर के विवाच आते हैं। शिवानीजी ने
उसका जो विषम किया है उसमें पान के विवाच के अनुभव भाषा का
सम्बन नया भिलता है। यहाँ —

"आज उसी कल्पनालोक का बदर्" से बनना जंग लगा ताला
जैसे स्वर्ण ही बटाक से हुन गया था। अस्पन्त अंधकार में भंजती वह
भूमि में बाहर हैलानी मिर दिले होने लगी थी २ ३ क्या पता उसकी
अत्यधिक में उस दम्भी व्यक्ति के उसके तौन्दर का लोहा मान लिया हो। उसे पाने के लिए वह भाय भैसे ही व्याख्या हो उठा हो, भैसे आज तक अहेंध सुध नतवातु होंगे उसके समपुत ह्याल्ल को महजाकर बैठ गये थे। क्या वह & बुलाया माया उसे वही तरुणा देने बुझा गयी हो। इस री दी क्या उसके पैरों के ठीले से ठोस धरातल को उसकी कुँठाई बियाह--धातना ने स्वर्ग दी बींच लिया। कैसा बाध्य था उसका जिस माया ने वह पक्षी बार ऐसी धनिष्ठता से बोल पायी थी, वह क्या उसे ऐसा तरुणा देने बुझा सकती थी? और फिर जिस व्यक्ति को लेकर वह निर्देश रशिन्दा तानाख-बानाख बुझ रही थी, वह उसकी नीलचप-पुरातिका का एक--एक दार्जित परिपूर्ण पढ़ उसे दूर नहीं पटक था? 122

"बीजीले" उपन्यास का कर्ण तो पद्म-विश्वा और देश-विकेश प्राप्त एक अनुभवी व परिपूर्ण प्रयासारी है, परंतु उसकी पत्नी नंदी पदार्थी गाँव की है। उन दोनों में कोई मेल नहीं है। वह अपनी पुत्री जयन्ता को लेकर चित्रित है कि यदि वह उसकी गंवार माँ के पास रही तो धौपट ही जायेगी। इस तरह में उसकी जो तोहै है उसे शिखरी-- जी ने निम्न निधित्व परिक्षयों में अभिप्रतिक दी है --

कर्ण अपनी लोकी पुत्री को देख रहा था। आरंभिक था कि बधी के पेटरे का कहीं भी माँ के नाई-नवक से मेल नहीं हो। यदि होता तो भाय कर्ण उसकी और देश भी नहीं सकता, नंदी के दृष्टि के बाहर उसे ऐसी नृत्य न जाने क्यों थी, न देख इसकी कोई कैपिटल बुझ पाता था, न पाना यादः ही था। कारण, नंदी में कहीं भी उसके सामाजिक स्तर को खराब करने की युगाचार होती? जब कभी कर्ण उसे अपनाने का, तुधार-हर श्यामलक का संक्षेप होने आगे बढ़ता, अपने शब्द बनाने और वोल-वाल के हथियार पर वह उसे दूर देख देती। कर्ण ने अब धोखा की छोड़ दिया था, किन्तु पुत्री के भक्तिक के बचाया में वह खिली भी प्रकार नंदी के लोगों सिरफे जाने के लिए नहीं छोड़ सकता था। इसीसे उसने अफिलेट उत्तमण घर का क्योरेट तलुक में उसे भर्ती कर दिया। मदर बालिया ने बड़े प्यार से उसे शोद्री में निया, तो वह दर्द काटकर भागने लगी। लाल-लाल गोरे से शेषदारी में मेल उसने कभी देख नहीं थी। उस पर काना
उपरोक्त परियोजना में बीच-बीच में कई दूसरे विधान आये हैं, परन्तु विवाद या तौय से सैलान जो विधान है उनकी भाषा परिवर्तन के मानक-तिम रास के अनुकूल ही है।

"मैरियो" उपन्यास की वन्दन पर चलती देवन में चार बड़े ब्लाश-रास करते हैं। उसके पति को बाँधकर उसके सामने यह गुप्ता कस्तम किया जाता है। जब: आस्मान्या के विवाद से वह देवन से मुड़ पड़ती है। परन्तु स्वामी मैरियों तथा उनकी मैरियों मायादेवी उसे बढ़ा लेते हैं। कई दिनों के बाद उसे होड़ आया था। उसके बाद से वह मरी रह गई थी। परन्तु...

वहाँ भी मैरियों की दुर्लभता उसके लाप पर सुर्ख्त हो जाती है और वह वन्दन को अपनी नयी मैरियों बनाने का संकल्प उठा लेता है। उसी संकल्प के तहत वह माया को तरंग से भाव भगी छोटी है और दिल्ली सिक्का विपुलिया के पास पहुंच जाती है। विपुलिया समझती थी कि वह माया की देवी बनकर दिल्ली मुगल आये हैं। परन्तु वन्दन के छूट से सरार दुर्लभ हुकुम वह उसे अधिक समय रखने के लिए तैयार नहीं होती है। उस समय उसके मन में जो विवादों का दूसरा मतलब है, उसका बड़ा ही सटीक भाषा में नेश्विका ने वर्णन किया है। यथा —

"इस लाप को विवादों को, अपने वहाँ के बालिकों में रखने का तांत्रा। विपुलिया तहत ही बैठी। रानीजा का गुरु भानू बीच-बीच में, अपने मिलनों को लेकर आता रहता था। फिर स्वयं विपुलिया के गुरु भी थे उससे लिखने की मांग आ तकरे थे। जिसके अलौकिक लाप ने, माया के सिक्का दर्जिया का उद्धारण रचा दिया।
यह व्या उसके जोड़ गुरु की विचार तर्कों में घुरनियां नहीं किना सकता था 9. 24।

अभिधारण यह कि जिस पुस्तक का वरिष्ठ होता है, वरिष्ठ
का जो परिवेश होता है, उसके विचार भी उसी के अनुप्य होते हैं और
लेखक जब उनके विचारों का आलेखन करता है, तब वह उन-उन वरिष्ठों
की भाषा का ही आश्रय ग्रहण करता है।

207 : वरिष्ठों के विचारन स्तर और भाषा :

पृष्ठनिर्दिष्ट व्यंजनों में इसे भाषारूप समझा गया है कि
यथार्थ वरिष्ठ-युग्मित के निमित्त में भाषा का बड़ा महत्वपूर्ण योग होता
है। वरिष्ठों के स्तर अलग-अलग रहते हैं। वातावरण, दृष्टि, तंकार,
व्यवसाय, अवस्था, लोह-केल जैसे अनेक कारक है जो नाम पुस्तक के
वरिष्ठों को हुल्लू करते हैं। अतः लेखक या लेखिका उन वरिष्ठों का
निमित्त करते समय उत-पुस्तक की भाषा का ही प्रयोग करते हैं। पात्र
यदि ग्रामीण परिवेश का है तो उसकी भाषा भी ग्रामीण परिवेश की
रहेगी। वरिष्ठ यदि शहरी है तो भाषा उसके अनुप्य होगी। शहरों
में भी हरभार, भरभार और लेखन जैसे शहरों में भाषा के अलग-अलग
स्तर परिणत होते हैं। वरिष्ठ यदि मुसलमान है तो उसकी भाषा में मुसलमान
कल्पना ते पुढ़े हुए शब्द कल्पना आयेगी। उसकी बातचीत में "तुम्हानेहार"
"उत्साहविहार" या "वल्लाह" जैसे बाद अवश्य पाये जायेंगे। वहां भी
परिवार यदि बड़ा का है तो उसकी भाषा में उठे की भाषा और
व्यवसाय निमित्त और परिवार यदि बेदा बाबारा में है तो उसकी भाषा में
 "बधिकार" का पुढ़ अवश्य चलेगा। गरज यह कि परिवार के अनुप्य
भाषा का प्रयोग लेखक करता है और इससे परिवार-युग्मित और अलग
उपयोग लेखक में यह लेखक या लेखिका लेखा करते हैं। जिन्होंने अपने
परिवारों की जीवनशैली भाषा के जीवनशैली को। शिक्षाविदों
के पात्र अनुप्य की पूंजी है। भारत के कई प्रांतों और जिलों में
वह गयी भी हैं, अतः उन्होंने जिन परिवारों का आलेखन किया है।
उनकी यथार्थ भाषा को भी वह ने आयी है। यहाँ विभिन्न स्तर के खुल वरियों की भाषा पर विचार किया जा रहा है।

"मायापुरी" उपन्यास की श्रीभा एक चुंबक चुंबकी की लड़की है। अठारह वर्ष की आयु में ही उसने बी.ए. कर लिया था। संस्कृत पर उसका विशिष्टा प्रविष्ट हो गया था। वह रात-दिन संस्कृत साहित्य की पढ़ती रहती थी। इसलिए तरफ सतीश की बनियो मंजरी एक आदर्शिक युवती है और वह श्रीभा-साहित्य की परिपक्व है। निम्नलिखित क्षणपूर्व उन दोनों वरियों पर प्रकाश पड़ता है। भाषा भी पात्रानुसार प्रमुख हुई है।

यथा——

श्रीभा जब मंजरी के कर्मचारी में पहुंची तब मंजरी मर्मन पर अथ-गतियों स्टर्फ्रैंक निचुक का कोई ड्रीमरी उपन्यास पढ़ रही थी। उसे देख कर वह बोली — 'तुम भी बस या हो श्रीभा, ऐसी हुंदर रात है। तोचा था। यह दुगुरत को घुमने जायेगी। पर तुम्हें जब दैराज्यस्थल से छुटक मिले तब न तो कहती हूँ, घुमना ही है तो उसे ज्योतिर्लिंग, टामस मान, टामस बलिवंद, पर तुम पद्मोग सैराज्यस्थल तो कभी छाउंदेव-उपनिवेश तभी तो दिमाग में भारा है निरा काल। लड़कियों को देखती हो तो ऐसी भुगुली भागती हो ऐसे पहुँचे पर पत्थर बन जाँगी। तभी तो युजिकिटि में घुमारा क्या नाम रखा है, पता है न ही। हंसकर श्रीभा बोली — क्या नाम भी रखे जाते हैं यहाँ? '... जो दां, मंजरी ने कहा। 'जिले घुमारा नाम रखा है, उसकी बूढ़ी की प्रुस्तात करनी पड़ेगी; वहाँ, हाउ हूँ घुम नूँ, मारवर्ने प्रिस्त। '... है लेखानक जी राजकुमारी, यद्य दूर न हो तो अति गुज्राह की जिंदगी। '... श्रीभा हंसकर बूढ़ गई, बोली — मंजरी मुझे कभी ज्यादा बोलने का अभ्यास नहीं है। तुम्हें तो पता है न, इतने दिन भी गांव में रहो हूँ। वह घुम गंवारपन कर बूढ़ी, इतने हूँ घुम रहती है।' • 25
इसी उपन्यास की तात्त्विक एक बड़े बाप की बेटी है। उसके पिता भारत सरकार में राज्यपाल हैं। वही सतीश के पिता पर उनको उपाय किया था। आता सतीश की माता गोदायरी ने उस बाप को बुझाने के लिए तात्त्विक को आपनी बड़ा के लिए चुन लिया था, या कहें चुनने पर फिस्का थी। तात्त्विक की कार्य स्थूल थी और पिता के बीड़े लाई-प्यारे ने उसे और भी बिगाड़ दिया था। वह तथ्य को अल्पव नामक मार्ग तमाशाहै। यहां जो परिस्थित दिखाया गया है, उससे उसका विशेष —
बाहर तथा आंतरिक — पर काफी प्रभाव पड़ता है। यथा —

"वह उसे हमारे मंजिले के लाभ पुनर्मिश्रित है लीट रहे थे जिसे ब्रह्मा के साथ बड़ी-सी स्त्रियों का कार खाबार वे उनहाँ के पास रख गई।" "यानि आप लोगों को घर पहुंचा हूँ।" -- श्रीभानु की प्रमाण ने देखा, एक स्त्रीलांगी पुलिट चुंबक बन रही है। एक बाहर स्तपरित टीका पर था और दूसरा छिड़का था। बाल प्रेम-छोटे और छः से बुलते जोके के ये। आंध्र की मौसम का निजी सौंदर्य धारिता था।
कठन कठिन है। देवीलाल से उलट दो महीने रेखाक के सोच ही एक छोटे-सी शान बजने थीं और रंग जलता गला था जिसके अमृत एवं अर्थ करने से त्यों की आँखें बेंग को जाती हैं।
उसकी आंध्रें पर तूफान का शोभा लगा था। लाल-लाल दोनों रंग आँगों को स्मार्त से पोखर कर लिए-पुरी गूर्ण फिर बोली। "कम इतने, आँगें -- आँगें।" सराही तुपा थी, बोली -- "यह है श्रीभानु, दुर्गा गोदायरी की शाही और श्रीभानु, यह है तात्त्विक।" श्रीभानु ने धार्म जोड़े, तात्त्विक ने अपने उनको देखने का शोभा उतार दिया — आँंध्र बड़ी-बड़ी तंग के। फोटो की आंध्रें को श्रीभानु ने अपने अंगाई लो गिया भर और तब शोभा बदल गया था। गाल फूलने, आँंध्र छोटी और नाक फैली लग रही थी।
दोनों आँगें की सीट पर बैठ गईं और तात्त्विक ने कार का दी। श्रीभानु ही उसके सिलाइ के पर दर्द-सा होने लगा। तात्त्विक का नाकल का साही धार-धार फ्लाटकर उसे पीटी जा रही थी। "आप यहीं पहुँच पहुँच हैं क्या?" तात्त्विक ने श्रीभानु से।
पूछा। "जो हैं। " शोभा उत्तर देकर फिर घुम रही गई। पर आ
मेरा था। तविता ने कार रोक दी। बोलीं। "वलिए? मेरी अन्नमाजी
का देश आउँ। समय ही नहीं मिलता। आजकल बिखराना की वैल के मारे
कहीं आ-जा ही नहीं सकती। "शोभा सबके पीछे चली गई। तविता तीहों
घड़ रही थी। अपने भारी-भारी पैरों को उसे बड़े पल्ले से उठाना पड़
रहा था। तद्भव। कैडवाल सुताना ही गया था। उसका। उस पर देख-भी घूँ
याद तीनी-सादी होती तो समयं था मुताब कुम पद का लगा। उल-उली
क्लाउड़। छोटी इंग्ली बाँधीं। कटीं बैठीं और आवरणका से अधिक पाउड़र।
वह अन्दर गई। तो शोभा बाहर ही बड़ी रही। गोदावरी बोली। "आ
जा। बेटी। तेरी भी हो भामी है। " लल। शोभा लिए हुकूकर गोदावरी
के पैरों के पास बैठ गई। तविता सि.सि.कोच लाहों की झूला। बक्सों
पल्ला इत्यादि पूल रही थी। फिर बोली। "अच्छा अन्नमाजी। अब मैं
घूं। फिर आऊँ। "। शोभा उठ बड़ी हुई। तविता बोली। "वलिए।
आप कब्बा रहती है। अपने भी कार में मौसूं है।"। शोभा का घुंघ
लैंजा से नाल हो उठा। वह कैं बोले कि वह इसी गुप्त की आफिसा है।
उस गड्डीमाध्यम राजसूय-कथा के समय वह पतल-सी काप्त उठी। गोदा-
वरी बोली। "वह तो यहीं रहती है। मंजरी के साथ पड़ती है। मैंने
को गांव से भूला नियाम था कि यहीं साथ-साथ पड़ती है। " 26

उपरोक्त परिचय में लेखिका ने न केवल तविता के क्षेत्रस्थानों
में बल्कि उसके रेखांकन में जिस भाषा का प्रयोग किया है। उसके इस
पात्र की प्रसंगतिनिष्ठता। चौधारी दृश्य लाभ इकला है। इससे वह भी
पत्तित होता है कि लेखिका का उसके पृष्ठ को व्यक्तार है वह व्यक्तारणक
है। शोभा और तविता की पिल्लूनता भी यद्य साक्ष्य तरीके के आवश्यक
हुई है।

लेखिकानीच के उपन्यास "भूलकड़ी" में की फिल पहाड़ी-
परिवार में रहती है। उस परिवार का एक दामाद है दामोदर। वह
घोड़ा भारुक प्रवृति का है। किर तो देखकर उसका रोम-रोम कामाकुर
हो जाता है। एक दृष्टान्त पर उसका जो वर्ण लेखिका ने किया है। उसके
दामोदर के साथ-साथ कली के अंतर्द्र लौंदर का परिवर्तन भी प्राप्त होता है। यथा —

"दामोदर प्रताद को दृष्टान्त हृदय अब तक कली का अर्थगण
लीन मुझे थी। अब वह बड़े मनोयोग से उस मनोदर की कोट की अपनी आंखों के लिए देखा से नाप रहा था। पर वह देखा पल्ला ही पुलक्ष
था जिसकी अर्थ: कली की इस सुहास कोट पर नग-सी झूल गयी थीं! ...

श्रेष्ठ देखें हमारी विदेशी उक्ति दुस्कारी को दे दें। भर ही कमर
विदेशी उक्ति दें। किसी भी मिस मदहमार — फूल परफ्लाम की बोतल को गाल
से लटकर वह विदेशी उक्ति दें। किसी भी मिस मदहमार
से लटकर वह विदेशी उक्ति दें। जानते हैं कौन-
सी विदेशी उक्ति?

युद्ध आर्थिक लोकप्रिय रूप से बोतल बाई नैक एन्जर
युद्ध बाई हर पेट्स। ... अब दामोदर प्रताद को उसी उक्ति
की मूक पुनरावृत्ति करते देख कली मन-ही-मन होती लगी। एक टीनाख सारे
पुन्न का पिता है। यह व्यक्ति! कौन संस्कृत?

इती उपन्यास में राजा गौन्नू विदेशी का जो विवाह देखिका ने
किया है। वह भी भाषा की दुर्विर्द्ध से नाप्चार था। विदेशी उस पट्टी
अभ्यास का बेहतर है। उसके द्वारा कली रहती है। कली विदेशी को मन-ही-मन बाले लगी है। एक शिल्स विदेशी की कागार बाले लगी है।
है। पाकिस्तान के संबंध बड़े-बड़े लोगों से नहीं हैं। राजा
सारूल भी उनमें से एक है। आर्थिक व्यक्तियों का मानिक वह कैसा
इन्दिराकृष्ण युद्ध ता क्षणता आढ़ती परम भौजनवीर भी है। विदेशी ने
उसका जो विवाह देखिका ने। उसमें गुप्त भाषा भी उसके अनुलघ
है। यथा —

"यद्यपि हे गौजें, देखो कैमो जामाई जपेली।" इस के
कुटों गौजें युप में जामाई शाक्ताई मिला है ! .... पहले उन्हें विदेशी के
प्रस्ताव लगात गूमा कृपा दोनों द्वारे पकड़कर अपनी पाली पर धर
किये। आद्या बुध प्रहिये शैली मां लोकी।" — आद्या राती उठिये
वह तुम्हारे कुली की और देखकर बोला। इसी कुली के साथ पुजार को साझा हुई थी। अपनी रंग-रंगीली मार्गिक-मोटियों की अंगूठियाँ, नूरमूल के फूल-सी चौड़ी फूली, महीने जरीदार कुली की थोली, जुगा कुला और भवाव सा रोशनी करी। कुली को मां-मां पुजारी का वह दूर नरवाहु की-सी जिस हरचूंक से उसे देख रहा था, वह निर्भय ही रंगेधी पुजी की नहीं थी। कभी यह दूरभावु हरचूंक से उसे नींदे तक जले गए पर निर्भय होती। कभी आकल्पनक निमन्त्रणों पर ज्वला रही करणी की पर। यह दूर बंगला ही बाबा जहाँ रहा था। की है जाणाम बाबा। बांगला बिखरो पारले ना। क्यूं है जाणाम बाबा। बांगला नहीं सीख तो के वा। यह बंगला में तो बंगला ही कला है प्यारे। घर पट लौट बालो। अपनी कुली का सविरुच लंबीत्र सुना या नहीं। जोड़े पांडे। एक हूंफ धौली बाली देखी। और पांडे, गुलर फिटाई बढ़ाना घर। और कट्टालस के लोक लोगे से, कौ-कौ भी महाबारा। गी-कहमे स्वरता के-से फैले विद्रोह मुख में रसे जाने लगे जैसे शरवती हैं। यह दूर बंगला ही कला की धमला देख कर पुजारी दंग रह गया। जीवन बाबा दी आजगर वह बाबा में भी दर्शता था। कभी बाले-बाले भुजग से दर्द खुशी से मोटी तौल-सी अंगूठियाँ ने नारा भक्ती, कभी फिटाई और फिर गुलू हरचूंक, गौल केल पर सब तरह-तरह के वर्णकों की परिमंत-सी कर रही थी। एक साथ ही फूट के वह ऐसे अबर रहे ने रहा था, ऐसे तनिक-सा विलब बनने पर में वीरें वृक जायेंगी। खाने के बाद दूर धरण का पुरा किस्बना ही ले कर यह अनस टूट अगर की भारत आराम-दुरुती पर लग गया। 'जा वेल्यारी।' क्षय कर जाया है! कथा, वह गणभूषण दक्षरों के सिंहासन से खाने का कमरा मुलाता। निमन्त्रण धिनोले बांगे से दांत जबुद-बूनेड कर माता, महली के आकेश निकलता, ज्योति पर ही धुल्ले लगा। 28
"पेड़ा" उपन्यास की राज सुपमष्ट के पति पर कब्जा जमा हैती है, तब राज उसके लिए से पति को मुक्त कराने के लिए तब-पैर वाणिज्य-मौलवी आदि का सहारा खेलता है। ऐसे ही एक मौलवी के पास जाता है, लो वह राज को उसके राजस्ते से छुटाने का उपाय बताता है। यहाँ दूर्बिक वह मौलवी मुसलमान है, उसकी मांभा में मुसलमानी लेखन का "टर" लेखिका ने दिया है। उदाहरण कुलदाउ है—

"एक चीज हुई, उसे ऐसी जगह में गाड़कर रख देना।" लेकर वह उसे कम से कम एक बार लाने लगा। फिर कोई उससे पहले उसे न लाया। तबके उगर एक बार बाँध कई गुलाबपत्ती, महीना की फूल लिए तो उसका सबूत चोटी नहीं लगा। ... बेटी की हृदय चीज मिल जाता तो उसकी हर चोटी बनती का भी ख्याल नहीं। यहाँ-पहले मौलवी ने कहा था। और में जाने के लिए बुद्धा से दुहा भाग, उनकी धौली चीजें उनसे लूटता बुद्धा है, पर अपनी फल अब तक नहीं होता पाया।

इसमें नमक ले। नमक नहीं खाया जाता। बेटी, अपना लिए बुद्धा मांग नहीं लेता। अजल के नाम पर एक यही लड़की है। इसका रिमिट तय हो बुद्धा है। तोला-से भी तोला बरहीं से मिल जाते लोंग तो कहाँ तो बुद्धा बुद्धा ही देगा। हमारे हृदय, हमें हृदय चीज मिलता है देर नहीं लेनें — चीर अभी पर ही में है।" 29

इसी उपन्यास में लेखिका ने राज के तीन चर का भी उपयोग भाषा में दर्ज किया है। यथा — "कितनी तुंग लग रही थी खमब्बू। के बाल अद्वैत आर्कक धर्मों पर सवे गुलामों में बूढ़ा रहे थे। पतली कमर से नीचे उसकी नीली शिक्षा की पारदर्शी कीलाम भाषा में संगीत संग्रह पेट निःशुल्क आर्कक-सा वाक्य रहा था। उस पर नन्दी बृहदीयों में दुनिया बादली की पतली कर्तनी, चौथ की गणित-सी, स्कूली कैदियाँ के आकार में मूंगी कितनी आर्ककक लग रही थी। न पाया पर भी अभी की रोशन कांटे के उस फिरियों जाल में उलझ जातीं और कितनी बढ़ी जातीं। नजब की रोच थी उसकी — अभी पुराने आर्ककक गढ़—
टीले पर वह भाषाहरूका दृष्टि को छोटी-मोटी दोषीयाँ गाड़ देति थियो।

किसका अस्तित्व दिखाई देशका बाबु का आभासियां घुट करनी की जुलूसी में स्विन्तर लगातार रहे। गले में तकते उसका आठनियां तात्त्विक तारिक उस दिन भी दो उपड़े पदाँकों के बीच रही की क्षीण पहाड़ी नदी की तामांकी धारा के ही अनीये गेजे देश वर्ष रहा था।

कानौं में भी जुड़काँज़र पायरी की बालियाँ — उसकी शाया के प्रतेक प्रभाव निमो सरिता रूप थियो त कि देखे देखे के दम में ग्वार रंग-बिरंगी कल्पनाएँ जग उठे। बिकेकी से बिकेकी युक्ति की नरता।

शौर्य, बल, सौम्यको उस अपनी अराह अनुसंधानियों में पिसू हो मतल तकली थी। लगभग अनुमोदन उस सूक्ष्म देशपन्थ में भी कोशिका से बरसा बनदी बनाए गए धार्मिक की विविध ज्ञान निवेदन से देखे पर भी नहीं फहरानी जा सकती थी।

"शैव" उपन्यास के स्वामी शेषरानंद अपने पूर्व-वीजन में विवर वर्णनायान थे। मायादी उनकी शैवी है। पहले का बाल-विधिवा थी। फिर तत्त्वमात्र की श्रेष्ठी देवस्वरी की नींव।

फिर वह लोक के सत्त्वा होकर कस्तो धर्मार्थ नाथ जोगी के साथ किये गये। उस जोगी के साथ माया धर्मार्थ के कुल में में गई और स्वामी भैरवानंद को देखो तो उनकी अराहारी उद्धति से विवर अपनी भगवान-बस्यों गद्दी को छोड़कर अनुकूल बनि गई। अब भैरवानंद उन्द्वन के तौर-पर देश परूट हो एक संकृत कृष्ण का अनुरोग उसके दिवार में है। विवर शैवी के विवरपद पर किये। अत: अनुकूल उैठों में है। उसमें कि वर्ण के उसका सारथिक मूर्त्ति के आँखों मूर्त्ति न बना है। उसे सु कर रही है। अत: माया का उसके मुख्य आया है। यथा—

"आई एम द लोई अप अल माय हैलिस् / अल अटटिफमट डैक आई ब्रैक / इवन प्रीडम लाइट्स मी नोट / डेंजल्स एम आई —सोर्स—

लेट / एन्ड बॉम्बपिगेंट / आई एम फिंगर, फिंगर क्रू इन मी। ...."
धनेश कुड़ कल्ण फार्मडा, सन्दर्श एब्लैमिल आफ़ सय लूटी? // द धनेश कुड़ कल्ण फार्मडा ढिरीर डन अनवर्दी आफ़ द पैसा, बढ़च ढिरीर फिलोफिलसोफ़ नायक द मार्मा आफ़ बोम, फ्लाइड ढु द पारिशाल, नायक द ताप्ला, स्मापाइडिंग ढु द मैलेटेंसन आफ़ आर्म्स, नोट्स द आर्म्स आफ़ बैल, ले स्लाइड आल स्वर्डिफिट्स एप्प्ड हाइडेट देम्सेलफ्ल्ज टु प्लेट हर्स्लोन। ... कहा मिलेगा रैला तौनैयर? // उस सूंदरी का दर्शन भी उसके मुख को प्रतिविश्व करने की क्षमता नहीं रखता। पारिशाल की सुगंध के विविध द्रामराली-सी आर्म्स में एकाकाय होने की आशा में सागरात्मक तपस्वियों की आर्म्स में ती — उसे देखो ही मानवताम की हर्भि सबको छोड़ रेसी की ओर विविध को जाता है।" 31

"कलेक्स कसतूरी शौर" के नायक के पिता एक लघुती तमन्नी गायिका के मोहदार में कंसकर धर-शृंगारी, पतली-शृंग तबशुक विस्मृत कर बैठते हैं। रातदिन उसके साथ ही बोलते हैं। उसी में नायक की बी अकाल सुदुष्य को प्राप्त होती है। नायक की परवरिश और देश-भाग घोड़ा बांध करते हैं। लेखिका ने उनका जो दर्शन बिखाया है, उसे उनके परिचय पर भलीभाल प्राप्त पहला है। यथा —

"घोड़बाबू, आपके पार में और कोई नहीं है\n\nएक दिन पूछ दिया। ... \n\nरे, पार ही नहीं है बाजा, तो कोई के केंद्र से होमा, गिनी विलनी होता तो हमको फ्लोर में रियाल करने देता। \n\nतब पूछत, तो अम्मा के जाने के बाद, उस रीवीडन स्नाध्योन कोटी में घोड़बाबू ही के ए माना आर्म्स, संका-सहर, एप्डर्डफक — तबशुक। अम्मा को मृत्यु के तीसरे ही महीने में ही बहुत होमार पड़ गया। भयानक मोहिरिया के थिवा के में मोहक के पत्ते-सा पार-भर कपता में एक दिन "जागा-जागा" चिल्ला रहा था, उच्च घोड़बाबू मेरे उच्च पार-भर की रतीका-कपलार डाले-डाले हाथिने लगे थे, पर मेरा जागा नहीं जा रहा था। तबता
अपनी मेलूएंसिंग-सी देह धूंध पर पहले लकड़ियों के स्तूप पर डाल , वे न जाने का तक "हुगा-हुगा" ज्वाला रहे हैं , जब तभी ज्वाला के ताप से त्वचाक हो , में लकड़ियों के स्तूप को लात मारकर निरा तो मदाम से घोट-बाँध धराष्ट्रीय हो गये । "मेरे कौनी रे झोका " [भार दिया रे झोका]
कह वे शायद मुझे हंसाने की केफेट में ही दोनों हाथीये से अपनी अंतर कटी को पोर्थी हाथ , बिंक कुमार में बड़े होकर कराए रहे । मुझे हंसी आ गयी और उनका वैपुरा फिगर गया — " हूई हेमलिय तो र बार फिसू होइ ना । " [ हूई हंसी दिया अब बुक अनिष्ट नहीं होगा ।
तिरव वे मेरे तन्त्र लाल को सहलाते स्वयं बड़हक जाने लगे — " अहाँ रे देने अन अनु दुरु के । खान उनी नौकाविहारी कान्नाकालयो रहें " [आहाँ नज़ा बुझार में पड़ा है और वे नौका विहार में जूड़े हैं ] [ ... "वैसा तली काम है , अभी तब वाणी । " मेरे लाल पर ठीक पटकी रखो घोषाण फिर अपनी घातकोचित में जाऊँ हो जाते — " जल सह वाजिका ,
और बना बना बारे हैं ] [ मनका के निये बाबू ख्यात विवाहित । " हूई हुकुम बारे हैं ]
मनका के तार्क विवाहित व्यस्त हैं ।" [32

"वौदह तेरे" की अहाँवा देते तो बड़े बाप की बेटी है , परन्तु 
उनके हाल नन्दी को धोड़ रखा था और उसकी परवरिश
[ृशीकारण में हूँ] उसके मामा के हाथ अभास वर्ण वातावरण में हुई थी । जब 
नन्दी उसे लेकर वाकनता होने के पास आती है तो अहाँवा बाने की 
चीजों पर धूट पड़ती है । इस पर उसकी मां बाब हान्दा है और कहती है कि अभी 
स्टेशन पर तो मामा ने विनवारा था । तब अहाँवा उसके 
जवाब में जो कहती है वह एक छोटी आत्माओं में पली बच्ची के होन्नहन की 
[हृदय] से अर्थत ही मद्यपान है , विखोरक उसकी भावा । लेखिका ने 
विकल्प उस प्रकार की भावा का प्रयोग किया है , जिस प्रकार की भावा 
उसकी अवस्था के बच्चे बोल सकते हैं । देखिए :—

"हाँ फिर , मामा ने दालमोट ने दो थी , विस्तृत झोँझोँ 
झोँझो ना ते दिये थे , अहाँ , इनके बीच मीठा मारा हैमा । घुमना


उपर्युक्त परिच्छेद में हम देख सकते हैं कि भाषा के तीन स्तरों में हैं—प्रथम व्यक्तियों के त्वरि स्तर इतिहास की भाषा, बच्ची अवधारणा की भाषा और कस्ट की भाषा। हालांकि कस्ट एक ही वाक्य प्रपता है, परंतु इसके मात्र दो रौंदोने तथ्य वातावरण का परिचय मिल जाता है। अवधारणा "तालों को " शब्द का प्रयोग करती है, वह जिन बच्चों के साथ वह पल पड़ता है, उनकी संज्ञा का अर्थ है।
विचारित: क्या जा सकता है कि वरिष्ठ-सूचित की प्रक्रिया में भाषा का एक तत्त्व के रूप में प्रयोग होता है। उन्होंने उपन्यास में बोलचाल की भाषा का प्रयोग वाचनीय समझा जाता है, जिनका अर्थ अपने वरिष्ठों की भाषा से बढ़ा करोबी रिकार्ड किया गया है। लेखक ने अपने उपन्यासों में जिस प्रकार के वरिष्ठों को लिया है, वे विभिन्न क्षेत्र के और विभिन्न स्तर के हैं।

लेखक ने अपने वरिष्ठों की परिदृश्यता भाषा का ध्यान रखा है।

इसलिए प्रतीत होता है कि स्विधात्री को जल-जीवन का गदरा अनुभव है। उनके अनुभवों का दैविक उनकी अनुभव-संपन्नता और आत्श्व जीवन-संपन्नता को घोटाला करता है।

2.08: विभिन्न व्यक्तियों के संलग्न वरिष्ठ और उनकी भाषा:

इसे स्वाभाविक ही समझा जायेगा कि वरिष्ठ जिज्ञासा व्यक्ति के संलग्न होगा, उसे तम्बूर भाषा, उसके वातावरण में स्थान पायेगी। व्यक्ति भल-भल भाषा अपने परिदृश्यों की भाषा को लेकर बनता है। कविता का यह प्रसिद्ध पद इसका ज्वलन उदाहरण है, जिसके कविता के लिए “दिनेरिया” का रूप लिया है। कविता बुलाई थे, जिन पद में उनके व्यक्ति से बुझे हुए शब्द हस्ताक्षर स्थान पर जाते हैं। उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति फिसान होगा, कोई बुझे होगा, लुभार होगा, लगवाला होगा, वकील होगा, प्रोफेसर होगा, पंजिया होगा, मौलिक होगा, डॉक्टर होगा तो भाषा में उसके व्यक्ति की शब्दावली आवार ग्रांप होगी। अतः लेखक जब उपन्यास की रचना करता है, तब वह इस बात का आवार ध्यान रखता है कि वरिष्ठ-सूचित में वह उन-उन वरिष्ठों के व्यक्ति से संलग्न शब्दों का चयन करें। स्विधात्री भी एक समय, अनुभव-संपन्न लेखक हैं। अतः उनके विविध व्यक्तिवादिय पाठों में हम इस तथ्य को रेखांकित कर सकते हैं।
उसी प्रकार "कुंभकर्णी" उपन्यास में मारिक और पन्ना पुराने टाईम की तद्वायें हैं। नारायण-गाना उनका वेशः है। वैसे उनका स्वरूप काली ऊँचा है। पौली की खोट में सामान्य लोगों को प्रेम नहीं है। बेहद-बेहद राजा-महाराजा, जमींदार, लाट लागभ तथा उनके बुड़े हुए बेहद माफिस्त, मंत्री, राजूत वैसी दर्शनों को ही बहता प्रेम भिलता है। मारिक और पन्ना का मां चूनौट भी उन्हें तमय की मानी हुई तद्वायक था। मारिक नेपाल के राजा से हुई थी, तो पन्ना से विलोकित था। उसका भिन्न लाटागभ का एंडी-सी-था। अंतः मारिक और पन्ना से सम्बद्ध हो विवरण भिलता है। उसमें उनके व्यवसाय से जुड़े हुए शब्दों का प्रयोग सहीता हृदा है। एक उदारन्ध प्रृथ्वीत्व है उदार मारिक अपने दलबल को लेकर अनेक शरीफ़के के उर्फ़ में कही गयी थी। जाने तो दो दिन पूरे दोनों बदलों में नपक भी गयी थी। पन्ना के व्यवसाय घराने के कल्प का तुलना की प्रसिद्धि तब हुई-जूदे तक थी। मारिक की मां के एक पुराने निम ने फ्रियाक्ष का थी भी के उनके नवादे के युग्म में पन्ना अपना वहीं बहुवर्षत पूर्वश्चित करे —
"बालम मेरी शौरी है

मैं किस पर कह गुमान।"

जिसे देखकर उन्होंने उसे बहुत पहले शुरुआत के अंधों के ते मोतियों की माला स्वयं पहना दी थी। अन्य पर धन्य के जीवन में पहली बार लोबदार बहुत दी की आँखा का उल्लेख कर दिया, "नहीं बड़ी दी। इस बार में कहीं नहीं नाच सुनी। तुम रोजन को अच्छी दो।" अब दिमाग करार हो गया है तेना 9 जानती नहीं कि हमारी साल भर की रत्न -- फूल, दवाय़, धौं -- भांति से आता है 9 फितना मानते आपे हैं रायवादा। अभ उन्होंने एक तामामन्य-सा अनुरोध किया और भू नहीं नाच तकरी (9) 9 इतीमें आगे पीली कोठी की वाणी लेने के संदर्भ में उसकी आँग तारी होली बोली --

काली तारे बोले गायरे लोक

मेघा दिने, देसे किने माठे

काली मैंदे काली हरी चोट।

वाणी लेने के बांधी-से मोटे गले को कितनी साज-संगत के बिना की शौरी को मोटे लेने का वर्दन प्राप्त था। रवानावालक हुरक्रिया, मोटे त्वर का लघु आरोह जो कभी जादूई गति से अवरोह की तोपन परियों में शुनने वाले को भी वरदात अपने साथ लौटी ने जाता।" 35

"कालिन्दी" उपन्यास की कालिन्दी डॉक्टर है, नम: डॉक्टर, अस्पताल, नर्तक प्रहाड के पारिश्रेष्ठ के कारण इस उपन्यास में डॉक्टर के

प्रदर्शण ते बढ़े उनके शब्द आये हैं, जैसे -- इन्टर्नशिप, विकास, एन- बीकिनी, लेनगी, मौर्यरी, प्रियमितव, इलेक्ट्रॉनिक फ्लेक्टोरियम, टियरोसिंस, बैक्टिया, गेट टैक सुन, रैंटो-कीर्ति, ट्रामसिट-फैल, बाय- पास तर्करी, अ आसन-प्रतव, डायाबीटिक, विम-शूगर, बायोलॉजिकल नेसेसरी, वैज्ञानिक, लेकटरियन, पॉटियोग्राफ, स्पेलिंग-बैंग आदि आदि। 36

"समान-प्रमाण" उपन्यास की चर्मा भी डॉक्टर है। अत: उस उपन्यास में भी ऐसे अनेकानेक शब्द आये हैं।
इसके "कालिन्दी" उपन्यास के पिरोमाखा कुमारी के एक नरुरानी परिवार के चैत्य हैं। वे कुड़्ढ-रोगियों का भी इलाज करते हैं। उन्होंने कभी काली जागर चैत्य-विवाह को पढ़ाया था। जब कालिन्दी गाँव अपने मामा-मामी तथा अभाष से भेजे जाते हैं, तब इन्होंने पिरोमाखा से से भी भेजते हैं। इस संदर्भ में जो विवरण आया है उसमें कवककि से खड़ी-खड़ी नई शब्द हैं तथा उनकी बलियाँ मान्यताएं भी हैं। जो इस वर्ग के व्यक्तियों में पाई जाती है। यथा —

"अरी हूँ, तो हरी की बलियों कालिन्दी और हर सारे देहाती अनारी देहा।" वे उससे कहते थे पर दुर-दुर से उसके मरीज, उससे दवा भेजे आते थे, दवा भेजे उनसे कभी घर नहीं खाना पड़ता था। रोग, तंदुरू, पिपरमैंड, जैतूनी, अंगरक्ष, अंगरक्ष, वाना, दारूतंदी, गुल्म, जल्लू, पाखों, जलाती, रक्तलोह, कृष्ण तेली बहुमुखी बड़ी-बुड़ीकियों का उनके पास अंश मिलाता था। तीन बार दिनों में उन्होंने कालिन्दी को भेजे ही नाम हरम राहे दिया। एक दिन वह गोद में ही बटेर रखकर बसी रही तो उन्होंने उसे लिया,

"कैसी जागरवरी है हरी तुँ, गोद में बछरी पदार्थ रखकर वह रही है ॥ ॥

यदि ही दवा भेजे की बात नहीं है भानकी— यही तब तो दवा भेजे ही में फसले वह रहा है — तब तुल बटेर बुड़ी बुड़ीकियों , गोद में रहकर , मधुर एवं देवता, धूर्भ और वैष्णव का अल्प भी गुर्ग नहीं बनना वाहित है। यही नहीं मूर्ति, ईर्षण, पत्ती, बनी, देवता, धूर्भा और देवता का अल्प भी गुर्ग नहीं बनना वाहित हैं। "... " नहीं भेजे, देवी आपतक अपनी दी ओढ़बिधों से भेजे ही कुड़-रोगियों को ठीक किया है , मुखे नक्षे में , इन जंगलों से ही दुरू-दुरू कर बटेर लाता हूँ ॥... "कैसी जड़ी-बुड़ीया है देखे हैं मामा ॥ के ही — "कैसी मृत्युत्कृत ओढ़बिधा जो तुलू दूँदे पर भी तूम्हारी ओढ़बिध-बृहदी में नहीं फेली गई तुलू दूँदे पर तुलू — लीहे, तुलू दूँदे पर तुलू — लीहे, तुलू दूँदे पर तुलू — लीहे, तुलू दूँदे पर तुलू — लीहे। और फिर गायों में दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब
एक महीने में धर्मनाथ और तीन-तीन दिन पर शिवरात्रि के दिन, 37 दिनों पर रक्तमोक्षण।

अंत: शिवनीजी के उपन्यास का समाप्त करने पर हमें इस तरह का घान होता है कि साहित्य के अतिरिक्त कई विषयों का हमें घान है। उनकी पहुंच समय पारदर्शक को भी विदिषा विषयों का प्राची ध्यान प्रायोगिक विषयों का घान भिन्नता रखता है। आशंका के साथ घान का मन-मानक यथा शिवनीजी-साहित्य की अपनी प्रेरणा है और उनके उपन्यासों में हमें भिन्न-भिन्न व्यक्तियों से हुए संग्रह व्यक्तियों की भाषा के नाटा लघु भी धारण करते हैं।

2.09: भाषा के अन्तर्गत का आईना:

यदि कोई धीमा या झड़पना न हो तो भाषा से मुक्त होता है। अर्थात् कोई व्यक्ति करते हो भी कही-न-कही सच्चाई तो उसके साथ पर भाषा के लघु में आ जाती है। यदि कहा गया है — "मैंने झुक नौन बाय रंग कम्यंकी ही भरिकृत — कोर्पस। " ठीक वैसे ही कहा जा सकता है — "मैंने कैन की नौन बाय हूं ढील स्थिर आता हूं।"

और यदि व्यापक लघु से तोया जाय तो भाषा कितना जारी है। अंधेरा देशामध्ये राष्ट्रवादी भाषा भी कहते हैं — "अंधेरा पृथ्वी विवेचु।" "अंधेरा पृथ्वी दुर्ग विवेचु।" नहीं कहते। देशामध्ये संकुलक धी-सूचक वर्तमानों की संकुचित है, शराब को संकुचित नहीं। इसी प्रकार देशामध्ये भाषा में वह भी नैसर्गिक दिग्गजों में रिस्ते देख दुलटे से है। यदि — "दोर मंगल झूठ अह नारी, थे तब ताजम के ज़ोर के नाचा तो " या "स्त्री को पुनर्जय की यात्रा में होती है " या "दीवारी ने गाय दोरे तथा जाय " युगों कहानियों तो इन कहानियों से देशामध्ये देश के पुरातात्त्वक
तमाज का विरित प्रकट होता है। इस प्रकार भाषा का एक तमाजभाषात्मक अर्थप्रद भी हो सकता है। यहाँ सिवानीजी के उपन्यासों से कतिपय उदाहरणों को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनसे यह प्रमाणित होता है कि विरित की भाषा के द्वारा उसके अन्तर्गत पर प्रवाह डालने की महत्वपूर्ण भूमिका सिद्ध है।

"प्रैदेशिक" उपन्यास का कर्नल एक संयमन खुला उपयोगिता है।
उन्होंने कैठना-उठना उंची शोतायंटो में है। उसकी पत्नी नन्दी पहाड़ी की एक गंवार औरत है। उसमें नगरीय समय जीवन के तौर-तरीके नहीं है।
एक बार नन्दी की पूरी अड़ह्या बंगले के कार्य गंवार जी-तुम्हे कहते थे। जब जाती है।
इस बारा को लेकर कर्नल नन्दी को छोड़ता है। "कर्नल जी, तुम्हें हमारा भी नहीं होता।" लड़की को हड़के पर बाएं रोक करो अगर-अगर हम तुम्हें कहते हैं कि हमारा है। कर्नल नहीं पड़ना रहे।
"पिन्हराये तो थे, लाल फिरक ही को पलने थे। लौटिया।"
"यह इसके नीचे तुम्हं को हरी समवर पदार्थ संभव मादी बड़ी बना दिया है उसे, गंवार हो नहीं जंगली हो सकता, बीड़ी बरी रही है छोड़कर, मेरी ज्ञान का तो क्याक दिया होता।"
इस पर नन्दी पति का ग्रोध अड़ह्या पर निकाले हुए उसे डांटी और पिटी है।
"और जानें की छोड़कर, कर्नल नहीं रहे, मर जा, और रो-रो। तुरी माता निकल, तेरी ठहरी उठे।"

यहाँ पर कर्नल की पत्नी नन्दी द्वारा जो भाषा प्रस्तुत हुई है, उसके पहाड़ी प्रेमक की अवश्कित, गंवार, पूर्व औरता का विरित प्रकट हुआ है। "पड़ने-देने" को "पिन्हराया", लड़की को "लौटिया" और "फिरक" को "माता" कहना इत्यादि से यह बातें भूलिमात्र सच्चत ही जाती है।
परंतु यह तो नन्दी का आइये-वस्तु है, उसके भीतर को ममतामयी माँ तथा उसके स्थानानुसार उद्दय का पता तो तब कला है।
जब कर्नल उसे बोले में रहकर बुधवार घर आ गई दो चार हज़ार तूल में में भेज देता है। कर्नल का ब्राह्मण प्रभावक जब अड़ह्या की मालिक में
बिठाकर उसी के लिए छोड़ने जाता है। तब अक्षर और नन्दी को इस बात का पता भी न था कि अक्षर को कल्कटे जाने का रहस्य है। आ: नन्दी कुमारक के कहती है — "अब तू करियो कुमारक, तांद लेगा।" 39 परंतु जब देर रात तब कुमारक नहीं आता तब नन्दी को विन्दा होती है। बड़ी देर बाद जब वह आता है, तब नन्दी उसके पूछती है — "बिटिया क्या है कुमारक? बड़ी देर कर दी।" 40 तब कुमारक कहता है — "मांजी, बिटिया तो मुझे यह लगा लोग के साथ, वहाँ स्कूल में पढ़ रही है।" 41 नन्दी की प्रतिवेशिता आचार जब उसे दटान बढ़ाती है कि "पावी, शुद्धी में तो पर आसमान, भीर मरने, भगवान सबकी सुनता है।" 42 तब नन्दी बिठाकर कहती है — "मेरी कब तुम स्त्रिया भगवान ने, दया मरी, बिलकिस रही होगी।" 43 यहाँ पर नन्दी के गुंडों में जो भापा लेखिका ने रचती है, उसके उसके मन की अन्तर्दर्दा पुष्प उभए है।

"क्रिपकली" उपन्यास का दामोदर पुलिस विभाग में आकर था, परन्तु अपने भुजे महाराज के कारण उसे निष्कम्बित कर दिया गया था। वह बड़ा ही गंभीर, मुसँदक, लोकुंदा, वाटोरिया और निकल प्रवान का व्यविध था। प्रवीर की समाई के बाद का एक समय है। उसमें वह अपनी सात तथा सात प्रवीर से जिस प्रवास को बात करता है। उससे उसके वरिष्ठ की उक्त विकेताओं या युवकों पर काफी प्रभाव पड़ता है। उसकी भाषा ही उसके वरिष्ठ का आईना बन जाई है। यथा —

"क्यों अभिज्ञ, दामोदर न जाने क्या से आकर फिर द्वार पर बड़ा हो गया, क्यों तभी भागेने को मिठाई का अवार भागोंगी? किनारे ना एक-एक बाँधु बाँधु हो, हों तो भाग हो। अपने पर में खाने के द्वार मिठाईकर का अधिक अभ्यास है। ".... एक बाँधु उसने प्रवीर की ओर बढ़ा दी और इंग्रज लगने लगा, "लो क्यों प्यारे, साहुरल की मिठाई और भी मोटी लगती है। ".... "तोल रटा ई प्यारे, आज तुम्हारे सहुरल तक मूंग आये।" कह कहने लगे तो
तुम्हारे साथ जो बड़ा फैलावा निमंत्रण दिया था। दामोदर ने वासुदेवी से विवाह के बाद अन्य ऐसी घटनाओं पर तुष्टि प्राप्त करने के लिए धीरे-धीरे आया। आई से, एक दल का नोट दें तो यह बात की गयी?

हमारे प्रवीण फ़र्जी वाले अन्य राजस्थानी लोग के पास रहता है और वह उनसे बुखार मिलने की आशा थी। "......" क्योंकि प्रवीण राजस्थानी लोग पहले पड़ गए। वह आदमी थी, वह का नोट लेने को बल्कि कोट की सीमा में गिर गया। "हम देखी दामोदर, वो दामोदर, पाण्डे के राजा हमारा गाँव में नहीं है। "......" ओह! आदमी का हमारा गाँव में है ना! "वह हमारा कहला लगा। "कहा नहीं है, हमारे का फिर वापस पर कुलाया है। आदमी हमारे नहीं कुला। वो कहा था ना। हमारे हो। आदिर पुलिस महाकाश का अप्सरा है। उड़ती चिंत्रित वाले हमारे धारकार धी पहचान लेता है। अभी उन्हीं का फोन आया था। हमने तुलन लिया। तुम्हारे लोग बड़े हैं। कोई मन्त्री आ रहे हैं। पाण्डे हमारा बड़ा है। यह उन्हीं को ध्वस्त कर रहे हैं। इसी के लिए इतनी खाली में गहवे भी हाथ भों बना, पर इसे टोक दिया। दामोदर जो कहते तोले-जते टोक दिया, तो फिर वह ध्वस्त हुआ। भी हो जाता। समझो। "44"

अभिव्यक्ति का भाषा पर पूर्वोत्तर प्रवास हो और कौन-से पत्ता के द्वारा कौन और किस तरह की भाषा युग्मा है, वह इससे बुखार जानते हैं। ऐसी प्रवासी भाषा का प्रयोग वह करता है जो वार्ता की तमाम-तमाम आंतरिक विशेषताएं उसकी कृपान पर आ जाती हैं।

2.10 : निदर्शन :

पुस्तक अध्याय के सम्पूर्ण लोकण पर तथा निम्नलिखित निदर्शनों।
तक पहुंच सकते हैं:---

11. पाँच के निर्माण में उसका बाहरी आणा, भीतरी आणा, उसका लक्ष्मी-क्लाम, परिवेश, शिक्षा-संस्कार, व्यवसाय, लिंग प्रभाव पर अफ्रिकन आयामों को लक्षित किया जाता है और इन लक्षणों यथायोग्य रूप में सूची करने में भाषा की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

12. विश्व-वस्तु एवं भाषा का संबंध भी अनुप दृष्टि होता है। शिवानी ने अपने उपन्यासों में विश्व-वस्तु के अनुप भाषा का प्रयोग किया है।

13. समस्तामयीक विश्व-वस्तु की प्रस्तुति में शिवानी को मजबूत की महत्वपूर्ण है।

14. शैक्षिक एवं पौराणिक संदर्भों में लेखिका ने उस परिवेश के निर्माण हेतु विश्वनृप भाषा का प्रयोग किया है। इस संदर्भ में शिवानीजी की भाषा आधारित ज्ञान समाधान दिखायी, जबर्दस्ती-प्रसाद तथा भगवती-रण मिश्र से ठली है।

15. शिवानी में नगरीय एवं ग्रामीण कथाओं के द्वारा भी माध्यम उत्तर लक्षित होता है।

16. वरिष्ठ-सूचित में भाषागत नैसर्गिक अपरिहार्य है। शिवानीजी की यह तो विचारता है कि उनकी कथा-सूचित में वरिष्ठ-वैदिक के तात्त्बिक संदर्भ भाषागत वैदिक पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है।

17. वरिष्ठों के नाना स्तर तथा व्यक्तिगत के अनुप भाषा का प्रयोग करने में शिवानीजी को सफलता प्राप्त हुई है। और इस संदर्भ में हम अनुभव करते हैं शिवानीजी की भाषा वरिष्ठ के अन्तर्गत का आईस पन जाती है।

===== ******* =====
:: 128 ::

20 तावड़कोली : पृ. 159-160 ।
29 गैण्डा : पृ. 29-30 ।
30 वही : पृ. 31 ।
31 भेरवी : पृ. 114-115-116 ।
32 कत्तूरी मुख : पृ. 12-13-14 ।
33 चौदाद देरे : पृ. 14-15 ।
34 कालिन्दी : पृ. 15-16 ।
35 तृणशंकरी : पृ. 22-29 ।
36 कालिन्दी : पृ. कस्बा : 22, 24, 27, 56, 64, 64, 64, 76, 98, 104, 104, 117, 116, 121, 126, 126, 135, 175, 203 ।
37 कालिन्दी : पृ. 199-201 ।
38 चौदाद देरे : पृ. 18 ।
39 वही : पृ. 18 ।
40 सैँसुली : वही : पृ. कस्बा : 18, 18, 19, 19 ।
44 तृणशंकरी : पृ. 169-170-171 ।

======== xxxxxx ========